ॐ श्री सतनाम साक्षी

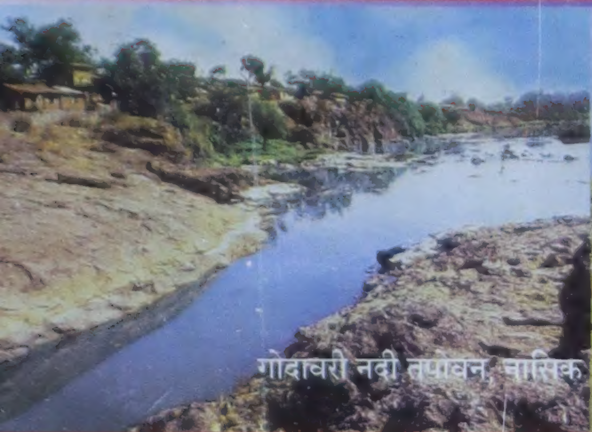
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत

आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

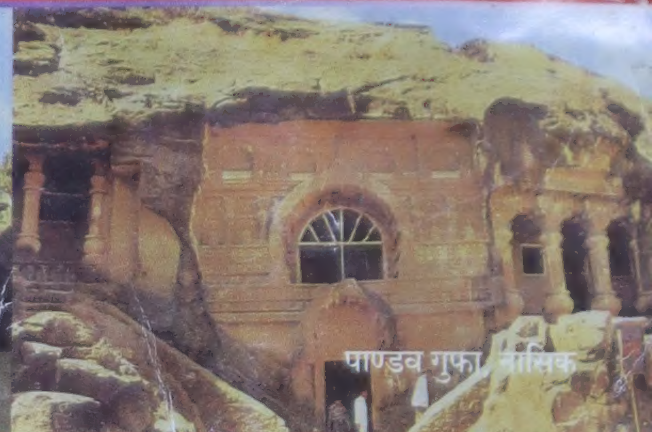
संस्थापक : सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश

वार्षिक शुल्क : रू. 50 (भारतवर्ष में) रू. 350 (विदेश में) वर्ष 23 अंक 10-11 अगस्त-सितम्बर 2003













सत्गुरू भगतप्रकाश जी महाराज
महाकुंभ पर्व नासिक
त्र्यम्बकेश्वर तीर्थ क्षेत्र में
श्री प्रेमप्रकाश अन्नक्षेत्र (छावनी)
का उद्‌घाटन करते हुए
संत मण्डल व प्रेमियों के साथ
5 अगस्त, 2003



सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महिमा

गुरु वन्दना

(१)

थलुः **स्वामी सर्वानन्द खे, मुंहिंजो सदा नमस्कार आ।**
सत्गुरु टेऊँराम जे, गादीअ जो सरदार आ।।
१. कहिणी ब॒हिणी रहिणी, सहिणी साईंअ जी सुठी।
खिमिया धीरज सरलता, ज्ञान संदो भण्डार आ।।
२. सत्गुरु टेऊँराम भी, जोति पंहिंजी हिन में रखी।
जे था मूंखां सचु पुछो, ईश्वर जो अवतार आ।।
३. मोहन मुरलीअ सां जीएं, मस्त कयो कुल ब्रज खे।
मिठड़ीअ वाणीअ सां तिएं, मोहियो सज॒ो संसार आ।।
४. तारन में जीअं चन्द्रमा, सूहें सभिनी खां सुठो।
सन्तनि में सूहें तीएं, संगति जो सींगार आ।।
५. जहिडो संदन नाउं आ, तहिड़ो आनन्द दे॒ सभिनि।
महिमा कहिड़ी मां चवां, प्रेमियुनि जो आधार आ।।
६. दुनिया जे कुंड कुड़िछ में, नालो साईंअ जो वज॒े।
''**शान्तिप्रकाश**'' जिते किथे, सत्गुरु जो जयकार आ।।

–सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज

(२)

तर्ज : **देख तेरे संसार की हालत....**

थलु : गुरु भगत थी गुरु भगितीअं जो, करणं आयो प्रचार।
सत्गुरु सर्वानन्द दातार।
महिमा तंहिंजी कहिड़ी चइजे, सर्व गुणानि भण्डार।
सत्गुरु सर्वानन्द दातार।
१. सिन्धु देश में जनम वतो हो, मेलो तद॒हीं खूब मतो हो,
धरतीअ ते धणी पाण लथो हो, जोगि॒नि जो जिते जुड़ियो जथो हो।
सतगुर पंहिंजी गोद विहारे, भाग॒ कयो त भलार।।
२. ब॒ालापण खां सत्गुरु दर ते, सेवा हुई जंहिं खूब कमाई।
तन–मन–धन जी भेटा द॒ुई, चरिननि में चित्त वृति लग॒ाई
ऋषीकेश में रही अकेलो, नाम जप्यो निर्वार।।
३. सबुर शुकर खे दिल में धारे, चित्त जी चिन्ता चूर कयाई।
सखत्यूं सूर सहारे सिर ते, गमु खाई गम दूर कयाई।
सभखे प्यार में पहिंजो कयड़ो करे प्रेम प्रचार।।
४. देश विदेश जो सैर कयाई, तर्क दुनिया जो गैर कयाई।
प्रेमिनि जो पिण खैर कयाई, ब्रह्म ज्ञान जो फैर कयाई।
पूरण पुरुष सचो जोगी॒ हो, संतनि में सरदार।।
५. सूरत सुहिणी मुहिणी मूरत, हरि दिल अन्दर वास करे थी।
सत्गुरु नाम जी जगमग ज्योती, प्रेम संदो प्रकाश करे थी।
''**हरिदास**'' जी वृति रहे शल, सत्गुरु चरण मंझार।।

–सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

(३)

तर्ज : **ईचक दाना मीचक दाना.....**

टेक : जगमग ज्योति जग में चमकी, मन में खुशियाँ छाई लाख बधाई।
जन्म लिया है जोगी ने यह, घड़ी सुहानी आई लाख बधाई।।
१. पिता सेवकराम है, भिटशाह गाम है।
ईश्वरी देवी माता है, जिस घर आया दाता है।
सर्वानन्द है नाम उसी का, अद्भुत आनन्द दाई।।
२. सत्गुरु टेऊँराम है, योगी निष्काम है।
ज्ञान बता अज्ञान मिटाया, ये ही उनका काम है।
सत्गुरु मिल गया पड़दा खुल गया, ज्ञान की ज्योति जगाई।।
३. सुमरन में नित मगन हुआ मन, गुरु सेवा में अर्पित था तन।
वाणी से गुरु महिमा गाकर, मन की शान्ति पाई।।
४. नाम गुरु का घर–घर गाया, शहर–शहर में मन्दिर बनाया।
अद्भुत अपनी लीला कर फिर, ज्योती ज्योति समाई।।
५. अमरापुर धाम है, जयपुर में विश्राम है।
मन्दिर जहाँ समाधी है, मन की कटती व्याधी है।
करके दर्शन मन हो प्रसन्न, सबने महिमा गाई।।

–सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज

(४)

तर्ज : **तेरी जुल्फों से जुदाई तो.....**

टेक : सुना है जग में नहीं तुम सा कोई दाता है।
तेरी दरबार में खाली न कोई जाता है।।
१. आया इक प्रेमी था, बेटा न जिसका बोल सके।
सैकड़ों कोशिशें, कर करके थे मां बाप थके।
तेरी रहमत से, वो गूंगा भी गीत गाता है।
२. श्रद्धा और प्रेम से जिसने भी तुझको याद किया।
सुबह और शाम को, गुरुदेव तेरा नाम लिया।
उसे दुनिया का कोई कष्ट ना सताता है।
३. जो भी नित नेम से, आ करता समाधी दर्शन।
साक्षी सत्नाम का, मन्तर जो जपे है निशदिन।
तोड़ भव बन्धन, मुक्ती को वही पाता है।।

–सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज

(५)

तर्ज : **संसार है इक नदिया.....**

थलु : हीउ जोगी॒ वैरागी॒ हो, सचु पचु त त्यागी॒ हो।
हुयो ध्यानिनि में ध्यानी, स्वामी सर्वानन्दु त्यागी॒ हो।।

१. रही दुनिया में सांई, दुनिया खां न्यारो हो।
चमके जिअं तारनि में, चंड ज्यां उजियारो हो।
संसार जे सागर में,सदा सांई सुजाग़ी हो।।
२. थिया जोग़ी घणा जग में, हीउ जोग़ी न्यारो हो।
जंहिंजे मुहं में हुई मणिया, भगितीअ जो भण्डारो हो।
बिया लाल लखें मूं डि़ठा, हीउ हरि अनुराग़ी हो।
३. जेसीं सिजु चंडु आ जग़ में, तेसीं नालो पियो हलंदो।
आहे अमर "**ब्रह्मानन्द**" सो, ईंएं, सबको पियो चवन्दो।
जिन दर्शन कया दिल सां, सो थियो वडुभाग़ी हो।

–स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

(६)

तर्ज : **लोक धुनि भैरवी**

टेक : कुदरत का देखो चमत्कार हो गया, सारे जगत में जै जै कार हो गया।
सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का, धरती पे आज अवतार हो गया।

१. आई सुहानी देखो आज ये घड़ी, बरसे गगन से सुमन की लड़ी।
सारा चमन गुलजार हो गया।।
२. ईश्वरी माता के है भाग्य का कमाल, सेवकराम जी भी हो गये निहाल।
चन्दा का सबको दीदार हो गया।
३. खुशियों में झूमें सारा भिटशाह गाम, जन्मे अवध में जैसे कौशल्या के राम।
घर–घर आनन्द का संचार हो गया।
४. झूले में झूल रहे स्वामी सर्वानन्द, जैसे यशोदा ग्रह झूले ब्रज चन्द।
निर्गुण ब्रह्म साकार हो गया।।
५. दर्शन देने आए स्वामी टेऊँराम, गोदी में लेके मुख चूमा सुखधाम।
आँखों आँखों में इकरार हो गया।।
६. आया अनोखा दिन जब बेमिसाल, सत्गुरु को आये हुए एक सौ सात साल।
गद् गद् सारा संसार हो गया।।
७. गंगा किराना हरिद्वार गुरु धाम, सत्गुरु के जन्मोत्सव का मेला अभिराम।
"**मनोहर**" अजब इसरार हो गया।।

–स्वामी मनोहर प्रकाश जी महाराज

जयपुर में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव सम्पन्न

संत जगत में आते हैं। जग तारन के लिए।
आदि, व्याधि, उपाधि, अविद्या टारन के लिए।।

संत महापुरुषों के गुणों का बखान करना असम्भव है। इस पृथ्वी पर जन्म लेकर स्वयं के हितों की कामना न करते हुए दूसरों के कल्याण को अपने जीवन का लक्ष्य मानकर उस लक्ष्य की प्राप्ति में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर अमरधाम को प्राप्त करते हैं। ऐसे ही महापुरुष थे हमारे परम श्रद्धेय तपोमूर्ति सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जिन्होंने इस धरा धाम पर अवतार लेकर हजारों मनुष्यों का कल्याण किया। उन्होंने प्रेमियों को त्याग, तपस्या तथा सत्य का पाठ पढ़ाया।

ऐसे परमश्रद्धेय महापुरुष का वर्सी उत्सव श्री अमरापुर धाम की पावन धरा पर पवित्र वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस वर्सी उत्सव का प्रारम्भ ३० जुलाई २००३, बुधवार के दिन पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पुनीत सानिध्य में श्रीमद् भगवत गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का शुभारम्भ करके किया गया।

बुधवार ३० जुलाई के दिन प्रातः ७ बजे से ६ बजे तक प्रार्थना, सत्संग, प्रवचन, आरती व श्रीमद् भगवत गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का शुभारम्भ किया गया। इस दिन पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन कर प्रेमियों को कृतार्थ किया। स्वामी जी ने सद्गुरु महाराज की महिमा का वर्णन करते हुए अपनी अमृतवाणी में बताया कि :–

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने जीवन में आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की सेवा तन मन से की और आचार्य श्री के आशीर्वाद से उनके पद चिन्हों पर चलकर परमपद की प्राप्ति की।

भगिती कई सत्गुरु जी, त कई स्वामी सर्वानन्द।
सेवा कई सत्गुर जी, त कई स्वामी सर्वानन्द।।

इसी प्रकार ३१ जुलाई से २ अगस्त तक प्रतिदिन प्रातः ७ से ६ बजे तक भजन संकीर्तन, सद्गुरु महाराज के प्रवचनों के कैसेट तथा सायं ५ से ७ बजे तक सत्संग व आरती में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

३ अगस्त, रविवार आज सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की वर्सी उत्सव का दिन प्रातः ७ बजे प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् ७:३० से ११ बजे तक सत्संग आरती का आयोजन हुआ। इस मध्य में सद्गुरु महाराज की प्रवचन कैसेट का श्रद्धालुओं ने श्रवणपान किया तथा संतों, महापुरुषों ने सद्गुरु महाराज की महिमा का बखान किया। जिसमें स्वामी मनोहर प्रकाश जी, संत हीरानन्द जी, संत नवीन, भगत भोजराज आदि ने प्रवचन दिए। तत्पश्चात् श्रीमद् भगवत गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ पाठों का भोग सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात् आरती करके सत्संग की समाप्ति हुई। इस अवसर पर आयोजित भण्डारे में हजारों प्रेमियों ने प्रेम पूर्वक भण्डारा ग्रहण किया। इस प्रकार देश–विदेश में सद्गुरु महाराज का वर्सी उत्सव मनाया गया।

दीपक मनवानी, जयपुर से

अनन्य भक्ति के शिखर

महर्षि सद्गुरु स्वामी श्री सर्वानन्द जी महाराज

भजन :

टेक : ***अमृत वेले सत्गुरु जी वदु शरण प्यारे,***
सत्गुरु तुहिंजा अगिला पिछला कार्ज संवारे।

१. ***सत्गुरु जहिड़ो दीन दयालु बियो कोई नाहें,***
कर्मनि बाझों कृपा कन्दडु सत्गुरु ही आहे
शरण पियनि जा सत्गुरु बेई लोक सुधारे।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जी की एक बड़ी विलक्षण विशेषता थी कि वे अपना सर्वस्व अपने पूज्य हृदयसीन आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को मानते थे। वे कहते थे कि मेरे जो भी कुछ है स्वामी टेऊँराम जी महाराज हैं। और कोई नहीं।

सत्गुरु टेऊँराम के बिन और न कोई मुझे आधार

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी के बिना मुझे किसी का भी आधार नहीं है। एक ही सहारा, एक ही बल, एक ही भरोसा, एक ही विश्वास है।

एक साधे सब साधे, सब साधे सब जाय

जिसने एक का आधार लिया है, जिसने एक को पकड़ लिया है अच्छी तरह तो वह पार हो जाता है। अगर कोई भी कभी इधर, कभी उधर घूमता रहता है तो वो चक्कर में पड़कर वहीं अटक जाता है।

दोहाः ***चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।***
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।

ये संसार का ऐसा चक्र है, ऐसे पाट हैं संसार में कि इसमें जीव फंस जाता है और पिस जाता है, परन्तु बचता कौन है।

दोहाः ***आसे-पासे जो फिरे, निपट पिसावे सोय।***
कीला से लागा रहे, तांको डर ना कोय।।

चक्की चलती ही कीले के सहारे है, अगर उसके अन्दर कीला ना हो तो चक्की चले भी नहीं। कीले के बिना कोई चक्की चला नहीं सकता, कीला होना भी जरूरी है और जो इस कीले से लगे रहे, जिन्होंने इस कीले को पकड़ लिया यानि कीले का सहारा ले लिया तो वो बच गये और जो इधर–उधर घूमते रहे वापिस गये आटा हो गये।

भवसागर अति महागंभीरा, जांका आर न पारा है।
मोह का पानी भ्रम चक्कर में, डूबत जीव अपारा है।।
कितना इसमें डूब रहे हैं, कितना डूबन हारा है।
कहता टेऊँ बांचे सोई, जिन सत्गुरु लिया सहारा है।।

ऐसे ही संसार रूपी चक्की में वो ही लोग पिसने से बच पाते हैं जिन्होंने एक का आधार, भगवान या श्री गुरुदेव का आधार ले लिया। जो एक के शरणागत हो जाता है, उसकी शरण्यं स्वयं ही रक्षा करते हैं। शरण्यं यानि शरण देने वाला।

हमारे मुरली मुकुन्द सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने भी सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को पकड़ लिया अर्थात् उनके शरणागत हो गये। प्रेमीगण सत्गुरु महाराज जी से कई बार पूछते थे कि महाराज जी आपका इष्टदेव कौन है ? गुरु महाराज जी कहते थे कि हमारे इष्ट, गुरु सभी कुछ टेऊँराम जी महाराज ही हैं।

उनको भरोसा था कि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज पर कि हमेशा उनके मुखारविन्द से एक ही बात प्रस्फुटित होती थी कि गुरु महाराज जी लाठी लेकर सबकी रक्षा करते हैं, हम सबकी संभाल कर रहे हैं। इतनी उनकी श्रद्धा, इतना पक्का विश्वास था स्वामी टेऊँराम जी में कि सत्गुरु महाराज हमारे साथ हैं वो मूर्ति को मूर्ति नहीं समझते थे। वे कहते थे कि ये सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज साक्षात् हैं ! साक्षात् हैं ! सद्गुरु महाराज जी के बिना कहीं भी उनको सुख नहीं था।

एक बार की बात है कि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज **पिनगंवा** में गये तो प्रेमियों ने वहाँ सत्संग का प्रोग्राम रखा आर्य समाज मन्दिर में, क्योंकि सत्संग के हिसाब से अपने पास इतनी जगह नहीं थी।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अपने साथ स्वामी टेऊँराम जी की मूर्ति लेकर आए, बोले पहले इस मूर्ति को स्थान दो, फिर हमारा आसन उससे थोड़ा नीचे करके लगाओ। हमेशा अपना आसन नीचे ही रखते थे, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज।

जैसे ही प्रेमी मूर्ति लगाने लगे तो उन आर्य समाजियों ने कहा हम मूर्ति की पूजा नहीं करते और न ही आपको मूर्ति लगाने देंगे।

प्रेमियों ने आकर ये बात सत्गुरु महाराज जी को बताई कि वे कह रहे हैं कि सत्संग भली करो पर मूर्ति मत लगाओ। सत्गुरु महाराज जी ने उत्तर दिया कि जहाँ पर

गुरु महाराज जी की मूर्ति महीं रखने देते वहाँ पर हम सत्संग नहीं करेंगे।

गुरु महाराज जी ने कहा आप खुले मैदान में मंच पर गुरु महाराज जी की तस्वीर रखो वहीं सत्संग करेंगे। कैसी निष्ठा थी। खुले मैदान में सत्संग हुआ और अन्य कार्यक्रमों की अपेक्षा उस दिन ज्यादा भीड़ आई। कुछ आर्य समाजी भी आए फिर तो हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि महाराज हमारे पास आकर भी सत्संग करो। गुरु महाराज जी ने कहा कि हम मूर्ति अवश्य ही रखेंगे। उन्होंने कहा भले रखो, पर सत्संग करो।

जिसकी निष्ठा है, जिसका विश्वास है गुरु महाराज के ऊपर जिसका एक ही दृढ़ निश्चय है कि हमारे सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज जी हैं तो गुरु महाराज जी भी तो उन्हीं के होंगे। किसी और के होंगे क्या। जिनका विश्वास है, उनका भगवान है। भगवान भी कहते हैं कि :–

मौको कहाँ ढूँढो रे बंदे, मैं तो तेरे पास में

कई जगहें बताकर अंत में यही कहते हैं कि:–

''मैं तो बस विश्वास में''

विश्वास के अन्दर ही भगवान हैं।

मूर्ति सब कागज की, तीर्थ जल सब पानी।
श्रद्धा नहीं मन में तो, चारों वेद कहानी।।

अगर विश्वास है तो कागज व पत्थर की बनाई गई मूर्ति में भी अपने इष्टदेव अपने सत्गुरु देव दिखाई देते हैं और यदि विश्वास नहीं है तो हम क्या कहेंगे कि ये तो पत्थर की मूर्ति है, कागज की मूर्ति है, ये हमारी सुनती है क्या ?

पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़।
तांते तो चाकी भली, जो पीस खाए संसार।।

कहते हैं कि अगर पत्थर पूजने से परमात्मा मिले तो मैं पहाड़ पूजूं। या तो फिर ये चक्की ही अच्छी है जिससे सारा संसार भोजन पा रहा है।

परन्तु याद रखें ये बात कि पत्थर की पूजा नहीं होती। मूर्ति भले ही पत्थर की हो परन्तु पूजा पत्थर की नहीं होती, पूजा उसकी होती है जो मूर्ति में विराजमान हैं। कभी भी हम ये सोचते हैं क्या कि पत्थर की पूजा कर रहे हैं ? जिसका वो स्वरूप होता है, उसी की भावना रखकर उसकी पूजा की जाती है। इसी प्रकार कागज की मूर्ति में भी भावना है, कागज नहीं। अगर कागज को पूजना होता तो अखबार या किसी अन्य कागज़ को उठा करके उसकी पूजा कर लेते। परन्तु नहीं, वो जो फोटो है उसके अन्दर हमारी ये भावना है कि ये सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज हैं, ये स्वामी सर्वानन्द जी महाराज हैं, ये गुरु नानक जी हैं। अर्थात् सबके अन्दर हमारी भावना बनी हुई है। और उसी से हम उसको नमस्कार कर उसका पूजन–वंदन करते हैं। कागज कितने ही नीचे पड़े हुए हों परन्तु यदि कोई कागज की मूर्ति नीचे पड़ी हो तो हम उसे उठा लेते हैं कि साइड में कर दें या गंगा जी में डाल दें ये ऐसे पैरों में नहीं जानी चाहिये।

तो पत्थर की पूजा नहीं होती। अगर पत्थर की भावना रखकर पूजा करो तो फायदा भी नहीं मिलेगा। अगर भावना की कि ये स्वामी टेऊँराम जी महाराज हैं, ये स्वामी सर्वानन्द जी महाराज हैं, ये स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज हैं, ये लक्ष्मीनारायण हैं, स्वयं हैं तो फिर ये भावना ही फल देती है। मूर्ति हंसती भी है, मूर्ति रोती भी है। भगवती सीता जब गई हैं माता पार्वती के मन्दिर में तो क्या आशा लेकर गई हैं, कि माँ ये जो राम हैं ये मुझे पति के रूप में मिल जाएं, ऐसी प्रार्थना की है वहाँ इस समय गोस्वामी जी ने बड़ी सुन्दर पंक्ति लिखी है :–

खिसक माला, मूरत मुस्कानी।

माता पार्वती के गले में जो हार डाला हुआ था, वो खिसक कर माता पार्वती के गले में आ गया और मूर्ति मुस्कराने लगी हमारा अगर भाव है तो मूर्ति मुस्कराती भी है रोती भी है। मूर्ति सब काम कर देती है। हमारे मधुर मुस्कान से सुशोभित गुरुदेव सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने गुरुदेव की मूर्ति को साक्षात् आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज माना एवं सदैव उनकी उपस्थिति का अनुभव यदा कदा प्रेमी, भक्त जनों को कराया। जब ऐसा ही विश्वास हमारा हो जायेगा तो सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहीं दूर नहीं हैं। सत्गुरु सर्वानन्द जी महाराज कहीं दूर नहीं है।

नामदेव आदि भक्तों ने भी तो मूर्ति में से उस परम प्यारे को प्रकट किया। अनेकों इतिहास–पुराण भरे पड़े हैं। इन कथाओं से। जब ये प्रसंग हमारे जीवन में भी अपनी खुशबू बिखेरेंगे तो ही लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

प्रेषक : **श्री सत्गुरु कृपा**, अमरापुर स्थान, जयपुर

गुरु की भक्ति की तो स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने

सत्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के चरण कमलों में मैं दासी कुछ शब्दों का वर्णन करना चाहती हूँ। गुरु महाराज जी की कृपा का हम जितना भी वर्णन करें वो कम होगा कहते हैं कि जो वीतराग महापुरुष होते हैं उन्हें चार स्थानों से विशेष लगाव होता है।

सन्त वहाँ सुख मानते हैं जहाँ जावे आखर चार।
जंगल झुगिया जिज्ञासु, चौथी जल की धार।।

अर्थात् संसार की समस्त चेष्टाओं से, अपने को जो हर प्रकार से दूर रखते हैं वे फिर नश्वरता से किनारा करके किसी अप्रत्यक्ष स्थान पर जाकर एकान्त में भजन, ध्यान, साधना आदि करते हैं और वह थे हमारे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ! उनका बचपन से ही ऐसे स्थानों से अत्यंत लगाव था। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जी का शुभ जन्म भारत वर्ष के सिन्धु प्रान्त में हैदराबाद जनपद अन्तर्गत हाला तहसील, पवित्र सिन्धु नद (दरिया) से थोड़ी दूर भिटशाह नामक छोटे से गांव में हुआ था।

गुरू महाराज जी जब ४–५ वर्ष के थे, तब स्वामी जी अपने पिताजी से गाना बजाना हटाई (शुद्ध सिन्धी) अक्षर लिखना पढ़ना सीखने लगे। भजन भी हटाई अक्षरों में लिखने और याद करने लगे। दिन में गाने बजाने का अभ्यास करते थे। रात को पिताजी के साथ और भक्तों के साथ गाते थे जैसे आयु बढ़ने लगी, वैसे ज्ञान वैराग्य भी बढ़ने लगा। नौ (६) वर्ष की किशोर अवस्था में स्वामी जी को संसार से वैराग्य हो गया। माया जाल से छूटने का विचार कर स्वामी जी आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज की श्रद्धा और प्रेम से सुश्रूषा करने लगे। सतगुरु टेऊँराम जी महाराज तो ईश्वरावतार थे। उनकी कृपा से भक्ति, ज्ञान, वैराग्य के नन्हे–नन्हे पौधे जो कि स्वामी जी के कोमल हृदय रूपी भूमि में उगे थे, गुरू महाराज का आशीर्वाद रूपी पानी पाकर वे बढ़ने और फलने फूलने लगे। लगभग चार वर्ष और भी तपस्या करते हुए बीत गये। इस बीच स्वामी जी ने सत्गुरु टेऊँराम जी के पवित्र नाम (उपदेश) प्राप्ति के लिये बहुत कुछ प्रयास किये परन्तु सफल न हो सके। कारण यह था कि सत्गुरु महाराज के दैदीप्यमान चेहरे से निरन्तर एक अपूर्व आभा निकलती रहती थी जिस किसी को सामने बात करने का साहस ही नहीं होता था।

बार–बार असफल होने पर भी हमारे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज हिम्मत और धैर्य से सफलता के लिये प्रयास करते रहे अटल विश्वास और सच्ची लगन जो कि सफलता की चाबी है।

जिसने ध्रुव को ध्रुव पद दिलाया। जिसने शव को नाव, सांप को रस्सी बना दिया था। उस विश्वास और लगन से स्वामी जी को भी सफलता तक पहुँचा दिया, लगभग एक वर्ष के पश्चात् एक दिन स्वामी जी माता जी से आज्ञा लेकर अकेले खण्डू चले गये वहाँ पहुँच कर सत्गुरु महाराज जी के स्थान पर गये वहाँ अपनी नानी कृष्णादेवी जी मामा स्वामी टहलराम जी, स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज और परिवार के सभी सदस्यों के चरण छूकर प्रणाम किया। सभी ने मस्तक चूमकर आशीर्वाद दिया। स्वामी जी को सत्गुरु महाराज कहीं बाहर गये हुए हैं ऐसा मालूम हुआ अतः स्वामी जी वहीं रह कर गुरु महाराज जी की प्रतीक्षा करने लगे। लगभग एक सप्ताह के पश्चात् सत्गुरु महाराज घर आये, गुरु महाराज के दर्शन कर स्वामी जी बहुत प्रसन्न हुए और चरणों में सस्नेह अपना मस्तक झुकाया, सत्गुरु महाराज जी ने अपना वरद हस्त स्वामी जी के मस्तक पर रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद पाकर स्वामी को प्रसन्नता तो बहुत हुई पर साथ–साथ आशा निराशा के झूले में भी झूलने लगे। न जाने इस बार भी सफलता मिलेगी या नहीं, यह सोचने लगे। दो चार दिन बीतने के पश्चात् स्वामी जी ने जैसे तैसे हिम्मत रखकर हाथ जोड़कर गुरु महाराज जी को अपने मन की व्यथा सुनाकर (नाम दान) के लिये प्रार्थना की, बालक (स्वामी जी) की यह बात सुनकर सत्गुरु महाराज जी ने स्वामी जी की ओर एक बार तिरछी नजर से देखा फिर मन में कुछ विचार कर

परीक्षा के उद्देश्य से स्वामी जी को किसी दूसरे समय आने के लिये आज्ञा देकर सत्गुरु महाराज भ्रमण करने के लिये दरिया की ओर चले गये। आज्ञा प्राकर स्वामी जी सबसे अनुमति लेकर अपने गाँव लौट आये। आज स्वामी जी ने उन्हें फिर आने के लिये आज्ञा दी थी, घर आकर स्वामी जी सेवा और तपस्या में लग गये। तपस्या क्या होती है इस बात का स्वामी जी को कुछ भी ज्ञान नहीं था, परन्तु बचपन से सत्संग में भक्तों की गाथाएँ सुनते थे। बस उनको इतना ही याद था कि भूखा रहने से भगवान प्रसन्न होता है। जैसे गीता इत्यादि शास्त्रों में इस बात को अच्छी तरह से समझाया गया है इन सबकी आसक्ति को त्यागना पड़ेगा, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इत्यादि विषय विकारों को त्यागना पड़ेगा। एकान्त में रहना पड़ेगा। जीव और ईश्वर के भेद को तोड़ना आत्मा से आत्मा का चिन्तन करना पड़ेगा। राग, द्वेष से अलग रहना पड़ेगा ये सब बातें अद्भुत् हैं ब्रह्म भी अद्भुत् है।

जैसे कहते हैं भगवान श्रीकृष्ण भगवान ने अपने शिष्य अर्जुन को सावधान करते हुए कहा था किः–

श्लोक ***त्रिविधं नरकस्येद द्वार नाशनमात्यनः।***
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेव त्रयं त्यजेत।।

काम, क्रोध तथा लोभ ये तीन गहरे गड्ढे हैं ये ही नरक के दरवाजे हैं। गीता के उस रहस्य को समझाते हुए सत्गुरु महाराज जी फिर कहने लगे कि इस मर्ण में कंचन कामिनी तथा कीर्ति ये तीन ऐसे गहरे गड्ढे हैं जो दिखाई नहीं पड़ते क्योंकि ये ऊपर से सुगंधित पुष्पों से ढ़के रहते हैं, इन गड्ढों में ऐसा तो जादू रहता है, जो इनमें गिरा हुआ मनुष्य भी अपने को गिरा हुआ नहीं मानता इन गड्ढों के नीचे गुप्त दरवाजे हैं जिनमें गिरा हुआ मनुष्य ऊपर तो नहीं आ सकता क्योंकि जब कोई अपने को गिरा हुआ माने तब न जब कोई अपने को गिरा हुआ ही नहीं मानता तो निकलेगा कैसे ? इसलिये वह नीचे के द्वारों से सीधा नरक में चला जाता है। सत्गुरु महाराज जी के अमृत और रहस्य भरे वचन सुनकर स्वामी जी और स्वामी गुरुमुखदास जी दोनों हाथ जोड़कर कहने लगे कि हे भगवन आपकी कृपा से असम्भव भी सम्भव हो सकता है। ऐसी श्रद्धा, भावना जानकर सत्गुरु महाराज जी मुस्कराकर कहने लगे कि यदि तुम दोनों का ऐसा विश्वास है तो भी एक वर्ष तक और भी प्रतीक्षा करो फिर तुम्हें नाम का दान दिया जायेगा। सत्गुरु महाराज के संतोषजनक वचनों को सुनकर दोनों बहुत प्रसन्न हुए फिर सेवा में लग गये। समय बीतते देर नहीं लगती प्रसन्नता के कारण उन्हें मालूम ही नहीं हुआ कि एक वर्ष का समय कैसे बीत गया बराबर एक वर्ष के पश्चात् सत्गुरु महाराज जी ने स्वामीजी और स्वामी गुरुमुखदास जी दोनों को बुलाकर नाम दीक्षा (गुरु मन्त्र) देने का शुभ समय बता दिया। निश्चित समय पर सामग्री पूजा लेकर सत्गुरु महाराज जी की सेवा में उपस्थित हुए, दोनों को विधिवत् दीक्षा दी और दोनों का जन्म का नाम बदलकर स्वामी गुरुमुखदास जी और स्वामी सर्वानन्द जी रखा। मंगलमय शुभ कार्य के सम्पन्न हो जाने पर दोनों ने सत्गुरु महाराज जी की परिक्रमा की और चरण छूकर आशीर्वाद लिया। आशीर्वाद देकर सत्गुरु महाराज जी ने उनको मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने की विद्या भी सिखा दी फिर दोनों को समझाते हुए कहा कि जो अच्छा या बुरा कार्य करता है तो वे ही उनके कर्मों को देखते हैं और साक्ष्य (गवाही) देते हैं। इसलिये जैसे परमात्मा सर्व व्यापक है वैसे सत्गुरु को भी सर्व व्यापक जानना।

श्लोक- ***खं वायुमग्नि संलिल महचि।***
ज्योतिषि सत्वानि दिशो द्रु मादीन।।
सख्सिमुद्राश्च हरे शरीर यत् किश्च भूतं प्ररगेमदनन्यः

इतना समझाकर सत्गुरु महाराज जी ने उन्हें सेवा करने के लिये आज्ञा दे दी।

श्लोकः ***आदित्यचन्द्रा वन लानिलौच चः द्यौभू मिरापो ह्रदयं यमरच।***
अद्दश्य रात्रिश्च उभे च सेध्ये धर्मरच जानति नररय वृत्तम।।

ऐसे ही हमारे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से (गुरु दीक्षा) ली थी। ऐसे थे हमारे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज। उन्हें मन की नजर से देखो तो हमें श्री कृष्ण भगवान के दर्शन प्राप्त होते हैं। ऐसे थे हमारे गुरुवर स्वामी सर्वानन्द महाराज जी।

गुरू भक्त सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज को हमारा शत्–शत् प्रणाम।

–भारती प्रेम प्रकाशी, कानपुर

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द यतीश्वरो जन्मोत्सव

अर्चनीय वन्दनीय सम्पूर्ण आनन्दों के वृंद सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्म अखण्ड भारत के सिन्ध प्रांत हैदराबाद के अन्तर्गत हाला तहसील के पास पवित्र पावन सिन्धु नदी के थोड़ी दूर पर भिट्टशाह नाम के छोटे से गाँव में भक्तवर पिताजी सेवकराम एवं माता ईश्वरी देवी के यहाँ पर दिनांक १२ वृहस्पतिवार सन् १८६७ में हुआ। भक्त सेवकराम के यहाँ प्रतिदिन सत्संग होता था आपके छठी उत्सव में नाना श्री चेलाराम जी के साथ आपके मामा सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी आये जो आपसे उम्र में १० वर्ष बड़े थे। सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वहाँ रहकर कई दिनों तक आपको ब्रह्मज्ञान की लोरी देते रहे। ब्राह्मणों द्वारा शुभ घड़ी को देखकर आपका शुभनाम सीरू–रखा गया। माता ईश्वरी देवी ने आपको धार्मिक संस्कार दिये। जिससे ६ वर्ष की छोटी सी उम्र में ही वैराग्य हो गया। उस समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के यहाँ प्रत्येक मास की शुक्ल एकादशी को भव्य मेले का आयोजन होता था। इस मेले में पिताजी के साथ आप भी गये और सतगुरु टेऊँराम जी से प्रभावित होकर नाम दान के लिये प्रार्थना करने लगे पर अभी आपको सफलता प्राप्त नहीं हुई पर आप गुरुदेव की शरण में रहकर प्रेम पूर्वक सेवा करते रहे। तब फिर दुबारा प्रार्थना की गुरुदेव ने आपकी कठिन परीक्षा ली और स्वामी गुरुमुखदास जी के साथ नाम दान दिया। और आपका नाम बदलकर सर्वानन्द रखा। आपका परमात्मा से बढ़ता प्रेम देखकर पिता सेवकराम जी को अपने पिता विशनदास की वह बात ध्यान आ गयी कि जब उन्होंने ब्रह्मलोक की यात्रा से पूर्व कहा मैं तुम्हारा पुत्र बनकर फिर जन्म लूँगा। आप अपने गुरुदेव के उपदेशों एवं सनातन धर्म के प्रचार प्रसार के लिये सैलानियों के समान भ्रमण करते थे। पिता सेवकराम एक बार आपके बारे में सोच रहे थे। तब माता ईश्वरी देवी ने सेवकराम जी से कहा आप सर्वानन्द की चिन्ता न करें। सर्वानन्द आपके पूर्वज वताया फकीर के समान आपके वंश का और भी नाम रोशन करेगा। इस प्रकार आपको माता का गुप्त रूप से आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की संत मण्डली के साथ तीर्थों की यात्रा करते हुये हरिद्वार पहुँचे, वहाँ हर की पोड़ी पर गुरुदेव ने शास्त्रीय विधि विधान से आपको सन्यास ग्रहण कराया। आपके सिन्ध देश में पहुँचने पर पिता ने आपको देखा तो देखकर दंग रह गये। तब सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सेवकराम जी को कहा हमने भगवान से साझेदारी की है। जिसमें सर्वानन्द जी को अपना साझेदार बनाया है। हमको जो हिस्सा मिलेगा, उसमें से सर्वानन्द जी को भी देंगे। तब आप गुरुदेव से आज्ञा लेकर उत्तरकाशी, हिमालय, हरिद्वार आदि तीर्थों की यात्रा करते हुये एकान्तवास करते अन्न क्षेत्रों से पवित्र भोजन के लिये मधुकरी करते थे। आप प्रातःकाल एवं सायंकाल में सैर करने जाते। शास्त्रों का अध्ययन करते, मौन साधना, व्यायाम करना, योग करना, सादा जीवन उच्च विचार, कभी भी किसी से हंसी मजाक न करना, हमेशा गुरु की भक्ति एवं ध्यान में लीन रहना आपको प्रिय था। हरिद्वार में आपको ह्रदय को विदीर्ण करने वाला समाचार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के ब्रह्मलीनता का समाचार मिला। तब आप टन्डे आदम दरबार पहुँचे। तब सभी सन्तों के निवेदन करने से आप महामण्डलेश्वर बने कुछ समय बाद देश विभाजन होने पर संतों के साथ आकर जयपुर में अमरापुर दरबार की स्थापना की जहाँ पर गुरुदेव की समाधी बनी हुई है। हरिद्वार में भी प्रेम प्रकाश आश्रम का निर्माण कराया। संतों ने देश विदेश में स्वामी टेऊँराम मन्दिर बनवाये, आपने अपने साथ माता ईश्वरी देवी को भी तीर्थों के दर्शन करवाये एवं श्रीलंका भी लेकर गये। आपने अपनी कोमलवाणी में साहित्य का सृजन किया सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को आप हमेशा अपने साथ मानते थे और उन्हें अपना इष्ट भी मानते थे। आप जीवन पर्यन्त अपने गुरुदेव की भरत के समान सेवा करते रहे। १६७७ में ८० वर्ष की आयु में श्री अमरापुर दरबार पर ब्रह्मलीनता को प्राप्त हुये। आपको आपके प्रिय हरिद्वार में माँ गंगा के तट १० नं. घाट पर जल समाधि दी गयी। हरिद्वार में प्रतिवर्ष आपकी पावन याद में आपका जन्मोत्सव मनाया जाता है। जो आपके उपदेशों को मानकर चलेगा। वह जरूर अपने मानव जन्म को सफल कर लेगा। सम्पूर्ण आनन्दों को प्राप्त कर सकेगा।

सुरेश (साँवल) प्रेम प्रकाशी
प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना

स्वामी सर्वानन्द अमृत-वाणी

प्रवचन कैसेट

ब्रह्मज्ञान का दान सत्गुरु देवत है

दोहा :-

प्रथम वदूं गुर पारब्रह्म, जो है सबका मूल।
जांके इच्छा से बना, सूक्ष्म जग स्थूल।।
हरि हर सूर गणेश पुनि, शारद मात मनाइ।
जांके पदवन्दन किये, सर्व विघ्न मिट जाइ।।
सत्गुरु के पदपदम का, लेकर मैं आधार।
कहे टेऊँ संसार सें, शोधि लिया निज सार।।
सावधान होके सुनो, प्रीतम प्रीति लगाइ।
शिखरध्वज चूड़ाला की, कथा कहूँ मैं गाइ।।

छन्द :-

जां ज्ञान वैराग्य विज्ञाना है, पुनि पतिव्रत धर्म प्रधाना है।
जितने जग नर नारी हैं, वे इसके सब अधिकारी हैं।
कहे टेऊँ जो सुन वीचारे, सो जन पावहिं मोक्ष द्वारे।
मात गर्भ में फेर न आवे, अजर-अमर घर माहिं समावे।।

प्रेम से बोलो हरे राम ! सारे पूजने योग्य महात्मा मण्डल ! तथा प्रेमियों ! सत्संगियों ! गुरुमुखों अपने शरीर इन्द्रियों को सवाधान करें, आसन बांधके अपने मन को सवाधान करके, हर एक जीव, हर एक मनुष्य, अपने मन को आप ही सुधारे। बार–बार समझावे। बार–बार मन से पूछे हे मेरे मन ! जो महात्मा कहते हैं– आप सुनते हो ! मन क्यो कहेंगे! कि हां जी ! सुनता हूँ कोई बोड़ा नहीं हूँ सुनता हूँ। महात्माऊं तो समझाते हैं। सुनना दूसरी बात है, समझना दूसरी है। समझते हो ! मन कहेंगे। हाँ जी! क्यों नहीं समझता हूँ। समझते हो तो करेंगे ? उसी पर विश्वास, निश्चय करेंगे कि नहीं ? हे मेरे मन ! विश्वास करो। जागो ! यह मौका आया है, जागने का। आप बहुत जन्मों में सो आए, हो। पहले चौरासी लाख योनियों में सोया पड़ा था। भगवन्त के मार्ग से, फेर माता के उदर में १० महीना सोया, फिर माता के गोद में सोया, फेर पिंघूड़ें में सोया। फिर बुढ़ापण में भी सोयेंगे। थोड़ा टेम जागने का है। हे मरे मन् ! हम दो वारी पंक्ती कहें दोवारी पंक्ति बड़े आवाज से भाई–माई अपने मन को जगावें। फेर सत् शास्त्र जागृति कराऐंगे, क्यों कहा है।

यही जपण की वेला श्री राम जपो मन मेरा।
कहता टेऊँ करो सुजागी, भजन करो नित हो बड़भागी।
पाओ निर्भय डेरा, श्री राम जपो मन मेरा।
यही जपण की वेला, श्री राम जपो मन मेरा।।

गरज के बोलो श्री रामचन्द्र भगवान की जय! हे मेरे मन ! **''कहता टेऊँ करो सुजागी''** सुजाग हो जाओ। नेत्र खोल के देखो। क्या देखो ? पहले अपने आपको देखो मैं है कौन ? कहाँ से आये हैं? कहाँ जाणां है ? ईहां क्यों आये हैं ? आपे ही आये हैं या भगवान आपको भेजा है ? कहे कि महाराज ! भगवान ने भेजा है कि भगवान को कोई जरूरत थी क्या भेजने की ? इहां कोई काम उसका रुका हुआ था क्या, जो आपको भेजा ?

महाराज ! आपे ही आये हैं, आपे ही क्यों दुःख में आये हो ? सुखी हो !...... प्रेम से बोलो हरे राम ! हे मरे मन ! जागो। जैसे :– राजा शिखरध्वज चूड़ाला जागा है। प्रेम से बोलो हरे राम ! जागा है जो विरलाप करते हैं।

हरि.. यह भोग लगत अति प्यारा है पुनि पीछा इनका खारा है।
बहु आयु मेरी गुजर गई, जग आशा पूरन नाहिं भई।।
चल काल निकट सिर आया है, नहीं परमार्थ कुछ पाया है।

यह जन्म अमोलक बीत रहा, मन शत्रु हमको जीत रहा।।

बहुत भोग भागा। शान्ति नहीं हुई। तृप्त नहीं हुई। अब तक नहीं हुई तो आगे भी ऐसे ही होगा। अभी काल निकट आया है, कोई परमार्थ नहीं पाया, शान्ति नहीं पायी, भगवान का दर्शन नहीं हुआ, तो कुछ नहीं हुआ। अभी यह जन्म अमोलक बीत रहा है, मन शत्रु मेरे को जीत रहा है। अभी क्या करें ? इतना कथा का प्रसंग कल से हो चुका है। आज के प्रसंग में योग वशिष्ठ निर्वाण प्रकरण में वशिष्ठ महाराज कहता है– हे राम जी ! सत्‌गुरु महाराज कहते हैं – जिज्ञासुओं ! गुरमुखों ! मुमुक्षुओं ! राजा शिखरध्वज चूड़ाला को नेत्रों से जल आया। क्या कहने लगे ?

यह जग रोग विशूचिका, कैसे निवृत्त होय।
और यत्न कोई नहीं, ब्रह्म विद्या इस खोय।।
ब्रह्म विद्या के पढ़ने से ही, उपजत आत्म ज्ञाना है।
ब्रह्मज्ञान से नाशे सब दुःख, मिटता तन अभिमाना है।।
ब्रह्म ज्ञान के लेने कारण, संत शरण में जाना है।
और काहूँ से नाहिं मिले यह, कहता वेद पुराना है।।
बादल बिन ना बरखा, जैसे, शशि बिन मिले न धाना रे।
हाट बिना ना सौदा तैसे, गुर बिन मिले न ज्ञाना रे।।

प्रेम से बोलो हरे राम ! बुद्धि को तेज करना। अभी वेदान्त चलेगा। प्रेमी मण्डली वारा हर रोज कहते हैं कि–महाराज ! यहाँ वेदान्त के प्यासी बहुत हैं। मैं बड़ा खुश होता हूँ। अगर जो समझेंगे नहीं, स्थिति नहीं करेंगे, तो प्यास होगी तो भी अपने को जानो, मैं बड़भागी हूँ। ये संत बसन्तराम आपको वेदान्त सुनाया। वेदान्त के बिगर मोक्ष नहीं होगा। प्रेम से बोलो रहे राम........

ये वेद भगवान का कहना है –

''ऋते ज्ञानान्न मुक्ति''

ज्ञान के बिगर मोक्ष, मुक्ति नहीं होगी। यह जग रोग विशूचिका, कैसे निवृत होइ यह संसार रोग है। नासूर रोग। कोई बड़भागी अरोगी है न तो सारा संसार रोगी है।

''जब देखा तब सबहीं रोगी, रोग रहित मेरा सत्‌गुरु जोगी।''

कहिंखे तृष्णा जो रोग़ लग़ो आहे, कहिंखे लोभ जो रोग़, को मोह जे रोग़ मे रोग़ी थ्यो आहे। को राग़–द्वेष जे रोग़ में रोग़ी, कोई ईर्ष्या मान में रोग़ी। चओ हरे राम :– अनन्त जीव रोगी हैं। यह कैसे दूर होगा :–

और यत्न कोई नहीं, ब्रह्म विद्या इस खोइ।
ब्रह्म विद्या के पढ़ने से ही, उपजत आत्म ज्ञाना है।

दूसरा यत्न कोई नहीं है ब्रह्म विद्या। ब्रह्म विद्या इसको दूर करेगी। ब्रह्म विद्या के पढ़ने से आत्मा का साक्षात होगा। आत्मा के साक्षात होने से। प्रेम से बोलो हरे राम ! सर्व दुःखों की निवृत्ति, परमानन्द की प्राप्ति होगी।

''जो ब्रह्म ज्ञान के लेने कारण, संत शरण में जाना है।''

ब्रह्मज्ञान कहां मिलेंगे विवेकी थे ? यहाँ बड़ी ऑफिस होगी। वजीर जो बड़ा गवर्नर हो उसके पास जाके कहो – कि मेरे को ब्रह्मज्ञान दियो क्या कहेगा? खायेंगे तो मार जो जोर भरेंगे तो जेल में। कि ब्रह्म ज्ञान क्या ? प्रेम से बोलो हरे राम। अच्छा किसी दुकान पर जो बड़ा दुकान होवे। ऊँपर चढ़कर कहो कि मरे को ब्रह्मज्ञान दियो। अगर जो बहादुर होगा तो ठहरेगा नहीं तो दुकान छोड़कर भाग जायेगा, कि पागल आया है। ये खेती पर मिलेगा ? नहीं। कहाँ मिलेगा ? जिसी जगह पर आप बैठे हो। प्रेम से बोलो हरे राम।

और काहूं से नाहिं मिले यह, कहता वेद पुराना है।।
बादल बिन ना बरखा जैसे,

बरसातें, बादल, घटा, कंकर, मेघ है नहीं, बरसात् कैसे होगी पृथ्वी से बिगर अनाज मिलेगा ? नहीं, हाट से बिगर सौदा मिलेगा ? नहीं। ''तैसे गुरु बिन मिले न ज्ञाना रे।'' गुरु के बिगर ब्रह्मज्ञान नहीं मिलेगा। इसका मालिक सत्‌गुरु है। ब्रह्मज्ञान के देने वाला। गुरु महाराज श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ में लिखा हैः–

हरि......ब्रह्म ज्ञान का दान सत्‌गुरु देवत है, देवत है नहीं लेवत है।
ब्रह्म ज्ञान का दान सत्‌गुरु देवत है।
मोक्ष इच्छा को उर में धारे, जो जन जावत गुर के द्वारे।
तांको आत्म ज्ञान सत्‌गुरु देवत है,
ब्रह्म ज्ञान का दान सत्‌गुरु देवत है।

प्रेम से बोलो हरे राम ! सत्‌गुरु दयालु हैं। सत्‌गुरु जैसा दयालु तीन लोक में कोई नहीं है। सच्ची बात आपको सुनावें। शंका होवे तो पत्रे पर लिखकर इधर भेज देना। आज कल परसों कभी पत्रे पर लिखकर पूछ लेना। सत्‌गुरु जैसा दयालु भगवान भी नहीं हैं। सच्ची करके पूछो। भगवान लेखा करेंगे।

गुरु महाराज लेखा ही नहीं करेंगे। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन ! लेगें नहीं, आप डरो मत। कि मेरे से धन

लेंगे। प्रेम, श्रद्धा विश्वास होवे, तो देंगे। आप अपने को अधिकारी बना के जाओ। अधिकारी के बिगर यह नहीं मिलेगा। अधिकारी के बिगर कभी ये ब्रह्मज्ञान का दान नहीं मिलेगा। ये है अभयदान। दुनिया के अन्दर बहुत दान है :–

श्लोकः *न गो प्रदानं न मही प्रदानं, न चान्न दानं,*
यथा वदन्ति बोधाः सर्व दानेषु अभय प्रदानम्।।

अभयदान गुरु देते हैं। जिसमें भयता नहीं है। दूसरे पदार्थों सारे में भयता है। भर्तृहरि महाराज को भी वैराग्य हुआ, तभी आये हैं। बन में कहने लगे, भगवान से क्या मांगे ? सदाशिव से क्या मांगे तभी विचार करने लगे।

भोगन में रोग भय, सुखों विषे क्षय भय,
धन मध्य भय भूप चोर की रहत है।
दास मांहिं स्वामिभय जय माहिं रिपुभय,
भयकुल बीच नीच नारी को महत है।।
मान मांहिं हानि भय, गुणों में गिलान भय,
काय में कृतांत भय भय सर्वगत है।
निर्भय वैराग्य एक धरो नरो सविवेक,
गायो मैं अनेक अब थाकी मोरी मति है।।

"भोगे रोग भय।" भोग में रोग की भय। "भोगे रोग भय" धन में चोर की भय राजा की भय वो ले न जावें। दास को स्वामी की भय उत्तम कुल में स्त्री की भय कि दाग न लगावे कुल को। भय ही भय, निर्भय तो एक ब्रह्मज्ञान है। वैराग्य सहित जो ज्ञान हैं। उसी ज्ञान पर बलिहारी। प्रेम से बोलो हरे राम! जेके भाई–माई जितने बैठे हो गुरु महाराज की मण्डली बाकी थोड़ा दिन आपकी नगरी में है। आप मोक्ष की इच्छा रखके आना। **"मोक्ष इच्छा को उर में धारे, जो जन जावत गुरु के द्वारे"** जैसे :– ईहां बम्बई के बाहर खेत होता है। ये धान चावल होता है। बहुत ये जो चावल बोहिते है अनाज के लिए या पलाल के लिये। अनाज के लिये, पलास भूसे के लिये नहीं बोहिते तैसे। आप जितने प्रेमी बैठे हो। मोक्ष के लिये इसी खेत में बोओ। भूसो, पलाल है क्या ? पुत्र, धन, पदार्थ। भूसो, पलाल आप ही मिलेगा। पुत्र, धन, पदार्थ आपे ही मिलेगा। आप मोक्ष की इच्छा रखकर के आओ। मोक्ष की जो इच्छा है। वो इच्छा नहीं है। दूसरी इच्छा बंधन दायक है। ये इच्छा छोड़ने वाली है। आजाद करने वाली है। **मोक्ष इच्छा को उर धारे, जो जन जावत गुरु के द्वारे। तांको आत्म ध्यान सत्‌गुरु देवत है।** आत्मा का ध्यान देता है गुरु कि ऐसे ध्यान करो आत्मा का। निर्गुण उपासना देते हैं इसका ध्यान करो। इसी विधि से करो। इहां वृत्ति को लगाओ। किसी चक्कर पर किसी कंवल पर वृत्ति को ठहराओ। प्रेम से बोलो हरे राम ! पर जाओ आप कैसे ? हरि :–

तन-मन-धन जो भेट चढ़ावें, अहंता ममता मान मिटावें।
तांको आत्म ज्ञान सत्‌गुरु देवत है,
पहले दाता शिष्य भया, जिस तन-मन अर्पया शीश।
पीछे दाता गुर भया जिन, नाम दियां बख्शीश।।

पहले जिज्ञासु दाता होके तन–मन–धन भेंट चढ़ावें, ऐसे नहीं चढ़ावें। ये गंदा शरीर। गंदा क्या कहा ? गंदगी गुरु को भेंट चढ़ावेंगे क्या ? नहीं। अहम्‌पना कि मैं हूं और मेरा है।

मैं मेरा गुरु चरणों में, दीजें भेट चढ़ाय।
कह टेऊँ तिहुं लोक में, जीवन मुक्त हो जाय।

जैसे :– राजा जनक। शायद उसकी कथा कल–परसों शुरु होगी। प्रेम से बोलो हरे राम। जो प्रक्रिया के विषय में आई तो आपको सुनायेंगे।

पहले दाता शिष्य भया, जिस तन-मन अर्पया शीश।
पीछे दाता गुर भया, जिहं नाम दिया बख्शीश।।
परन्तु शिष्य को ऐसा चाहिये, जो सर्वस्व गुर को दे
पर गुरु को ऐसा चाहिये, कि शिष्य से कुछ न ले।।

इच्छा रोटी खाने की जो रखता है ना, महात्मा कि ये जिज्ञासु मेरे को रोटी खिलावें। उसका उद्धार नहीं कर सकेंगे। रोटी खाने की भी इच्छा जिज्ञासु से न हो। प्रेम से बोलो हरे राम। तभी उसका उद्धार होगा। उसको क्या देता है। उसको आत्मा का ज्ञान देंगे। "अहंता, ममता मान मिटावें।" अहम्, अभिमान, अनात्म अभिमान वो दूर करे। उसको आत्मा का ज्ञान साख्यात गुरु देता है। हरि :–

हरि चरणे जाकां चित्त लागे, विष सम जान विषय रस त्यागे
तांको सूख महान सत्‌गुरु देवत है।

प्रेम से बोलो हरे राम। **जांका चित हरि चरणन लागे।** प्रभु के चरणों में प्यास होवे भगवान के दर्शन की। **"विष सम जान विषय रस त्यागे।"** जहर के समान जान के –विषयों भोगों का त्याग करें। त्याग क्या है ? इच्छा का त्याग करें। सुना। इसका सिद्धान्त क्या है ? इच्छा का त्याग करें। **"ताको सूख महान"**। उसको महान बडे में

बड़ा सुख। ये विषय भोगों का सुख नहीं। ये तो ऐसे हैं। क्या कहें ? वेदान्त कहता है :–

आत्म-विमुख बुद्धिजन जोई, तांको चाह विषय की होई।

जो आत्मा से बेमुख है। अज्ञानी जीव उसको इच्छा, चाहना विषयों की होती है। विषयों में सुख है ही नहीं। वेदान्त के अन्दर दो प्रकार की अविद्या है:–

१. मूला अविद्या २. तूला अविद्या

मूला अविद्या क्या है ? कि अपने निज स्वरूप को जिसने आच्छादन करके ढांप लिया है कि मैं कौन हूँ ये पता ही नहीं है। ये मूला अविद्या

तूला अविद्या चार प्रकार की होती है :–

१. दुःख में सुख बुद्धि २. अनित में नित बुद्धि

३. अशुचि में शुचि बुद्धि ४. अनात्म में आत्म बुद्धि

ये विषय भोग पदार्थ सिनेमा पदार्थ ये सब दुख रूप है। अज्ञानी जीवों को क्या पता ? जाके देखो। सिनेमा के दरवाजे पर बड़ी लाईन लगी होती है। कि महाराज बड़ा आनन्द है। कि ये आनन्द दुःख के बारुद से भरा हुआ है। आगे पता लगेगा। ये सुख नहीं है। ये विषय सुख। बोलो हरे राम।

विषय आनन्द संसार है, भजन आनन्द हरिदास।
ब्रह्मानन्द जीवन मुक्त, भई वासना नास।।

ये विषय भोगों का सुख नहीं है कि महाराज बड़ा सुख आता है कि नहीं। एक समय सागर की वीर चढ़ी। एक तो लहरी होती है। दूसरी एक वीर चढ़ती है। वीर दस, दस–बारह, बारह–पन्द्रह मेल तक चली जाती है। हमने सुना था अगले साल। यहाँ वीर चढ़ी थी धनुष कोटि से। रामेश्वर से। यहाँ हमारा प्यारा संतों का देश का, गरीबों का वाधु केसवानी दो गया था मद्रास। उसी ने आकर मेरे को सुनाया कि स्वामी जी मैंने विचार किया कि रामेश्वर घूम आयें। फिर गया स्टेशन पर। तो फिर कहा। अभी छोड़ दियो। प्रेम से बोलो हरे राम। फेर कहाँ नहीं। आये हैं तो घूम के जायें। रामेश्वर भी घूम जाऊँ। जहाँ भगवान श्री रामचन्द्र, शंकर भगवान की स्थापना करके लंका पर चढ़ायी करी। वो धाम है रामेश्वर। फिर पैसा निकाला। फिर गया बाबू के पास पता नहीं किसी शक्ति ने मेरे को रोक दिया। ये गुरु महाराज की शक्ति है सच्ची करके पूछो हरि।............क्या सुनायें।

सत्‌गुरु टेऊँराम तेरी, मैंने देखी महान शक्ति।
विश्व व्यापक होय रहा तुम, जूनि चराचर माहीं।।
साक्षी चेतन अमर ज्योति, तुम्हरी है हर जाय जगती।
सत्‌गुरु टेऊँराम तेरी, मैंने देखी महान शक्ति।।

आज है शनिवार। गुरु महाराज का जन्मदिन। प्रेम से बोलो हरे राम। उस दिन भी आखाड़ का शनिवार था। और आज भी शनिवार है तो वाधू केसवानी कहने लगे–मेरे को गुरु महाराज की ऐसी आकाशवाणी हुई कि टिकट न ल्यूं। मैं ली नहीं, फिर सुबह को सुना कि ज़िसी गाड़ी में जाने वाला था। वो गाड़ी जभी तृचनापली से आगे मदुराई से आगे रामेश्वर के आता है समुद्र पर। दो चार मिनट गाड़ी चली तो क्या हुआ। वीर समुद्र की आयी। वीर आयी तो मेंढ़क सारी गाड़ी ले गये। सागर से निकली नहीं सुना यह वीर होती है। प्रेम से बोलो हरे राम, तो वीर जो चली। क्या था ? एक मेंढ़क कहो, दादुर कहो, डड कहो डेडर कहो, कुछ तो समझेंगे। उसी वीर में एक बड़ा मेंढ़क चला गया। १०–१२ मइल चली गई वीर। फेर वीर जो पीछे लौटी मेंढ़क वहाँ रह गया। तो कुछ हवा चली आगे चला तो प्रभु की लीला सागर की तरफ नहीं चला। दूसरी तरफ चला गया। छलांग मारते–मारते आधा फर्लांग गया। आधा फर्लांग जो चला ! तो क्या देखे ? एक बड़ा तालाब है बुद्धि को तेज करना। जितने भाई माई बैठे हैं। बड़ा तालाब है तालाब देखके कहने लगे अच्छा प्यास भी लगी। वो पानी का जन्तु है मेंढ़क। तालाब देखा बड़ा खुश हुआ। उसी में छलांग मारा, छलांग जो मारा अन्दर तो जितने मेंढ़क मेंढ़की थी। डेडरी–डेडरी वो सारे आवाज सुनकर सारे इक्ट्ठे हो गये कि क्या है ? क्या देखें कि मेंढ़क। कहने लगे कि हमारे तालाब का तो है नहीं। वो उसी का जो मुखी था न बड़ा। मेंढ़क तालाब का। ये सारी पंचायते होती है। पंछियों की जैसे :– मनुष्यों की, पंछियों की, पशुओं की सारों की होती है पंचायत। वो जो बड़ा था मुखी उसको बुलाया कि आओ कहा – कि ये मेंढ़क पता नहीं कहाँ से आये हैं। खबरचार पूछें। क्यों कि खबरचार पूछनी चाहिए तब वो तालाब का मेंढ़क कहने लगा। सागर के मेंढ़क से। भाई खबर सुनाओ कि आप कहाँ के रहने वाले हो ?

आपका यहाँ कैसे आना हुआ ? क्यों आये हो ? खबरचार सुनाओ। उसने कहा– कि भाई ! मैं सागर का मेंढ़क हूँ। ऐसे वीर चली उसी में आया। फेर मैं भूल गया। भूल से यहाँ आके निकले हैं। आपके पास आये हैं तालाब में। कि सागर क्या ? सागर क्या ? कि सागर पानी है। उसने कभी देखा नहीं था न। तालाब के मेंढ़क ने कभी देखा नहीं था। मेंढ़कों ने, वो पानी सागर ? कि सागर अच्छा ! कहने लगे उसमें कितना पानी है? कि बहुत पानी है। कि भला चौड़ा कितना है ? कि बड़ा चौड़ा हैं। कि आओ मेरे पीछे। तो वो तालाब था। प्रेम से बोलो हरे राम। कोई आधा फर्लांग में था तालाब आधा फर्लांग में। धीरे–धीरे......उसी किनारे पर ले गया। कहने लगे कि इतना चौड़ा है ? कि नहीं ! बड़ा है। कि आप झूठे हो इसी से बड़ा कोई होगा दुनिया में अन्दर ? झूठे हो ! अच्छा भला उसी में पानी कितना है ? कि बड़ा गहरा है। बड़ा ऊँचा बड़ा गहरा है। अच्छा आओ तो जहाँ ४–५ फूट पानी था उहाँ डुबकी मार के उसको ले गया। जाके कीचड़ में पड़ा। कीचड़ देखी। निकल आया बाहर। इतना पाणी है। सागर का गहरा। कि नहीं बड़ा है। झूठ क्यों बोलते हैं ? भला चलो आगे। तालाब के बीच में ले आया। आके कहने इहां आओ मेरे पीछे। तो वहाँ पानी १५–१६ फुट था। उस में चला गया जाके चौंक पड़ा निकल के बाहिर कहने लगे। तालाब का मेंढ़क। जो मुखी सारे का। कि इतना पानी है ? सागर में अन्दर ऊँचा गहरा। कि नहीं बड़ा है कि आप झूठे हो। इसी से पानी दुनिया के अन्दर कोई बड़ा होगा ही नहीं। आप झूठ बोलते हो। सारे मेंढ़क–मेंढ़कियों को बुलाकर कहा देखो। झूठा आदमी दूसरे को बिगाड़ेंगे। निकालों इसी को उसी में किसने लात मारी, किसने दांत मारा। अब निकलो बाहर, उसको भगा के तालाब से निकाल दिया। किनारे पर पड़ा तो सब ने कहा सच्ची बात सुनाओ नहीं तो चले जाओं। वो कहने लगे दूर से। हे मेरे प्यारों। अपने सागर देख्या नहीं है। बड़ा गहरा है। बड़ा चौडा है कि आप झूठे हो। इसी से बड़ा, गहरा बड़ा चौड़ा दुनिया के अन्दर कोई नहीं होगा चले जाओ। उसको निकाल फेर भगा दिया। वो जाकर सागर में पड़ा। इसका सिद्धान्त क्या है यथार्थ? चओ हरे राम। अज्ञानी जीव इसी संसार रूपी तालाब के विषय भोगन के तालाब में पड़े हैं। महात्माऊँ, ऋषि, मुनि, जिज्ञासुओं, ब्रह्मज्ञान रूपी सागर का कहता है भाई उसी आनन्द को पाओ। उस महान सुख को पाओं। महाराज वो सुख कितना है। बच्चा पैदा होवे। सुना, सुख जो होता है। माता–पिता को उतना आनन्द आता है ? कि नहीं भाई बड़ा सुख है। बच्चा तो दुःख रूप है। कौन कहता है। सुख रूप बच्चा है। वेदान्त कहता है :–

कर विचार यूं देखिये, पुत्र सदा दुःख रूप।
सुख है चाहत जे पूत से सो है मूढ़न के भूप।।

मूर्खनि का गुरु है, राजा मूर्खों का। पुत्र में सुख है क्या ! बहुत कहते हैं महाराज पल्लव अर्दास करो। पल्लव पाओं पुत्र होवें। तो हम कभी उसको कहता कि आदमी पहिले ही थोड़ा है क्या ? इतनी जनता बड़ी है कि रास्ते से चल नहीं सकता हूँ। गाड़ी में नहीं चढ़ सकता हूँ व अभी भी पुत्र चाहिये! संसार को बढ़ाओगे तो दुख पाओगे। संसार को समेटो, लीन करो। तो जन्म–मरण के दुःख से छूटो। कि महाराज ! तो भी अपना होवें। एक पुत्र ! सच्ची करके पूछो एक पुत्र लाई ऐसे चिल्ला रहे हैं रो रहे हैं एक पुत्र लाइ। पर जिसको न १०–१२ पुत्र है चार पांच पुत्र है वो भी रो रहे हैं। रोटी नहीं देते हैं माता पिता को। पुत्र पैदा होवे, इतना आनन्द है कि नहीं........इसी से बहुत है।

कि नहीं आप झूठे हो। अच्छा भला !...........पुत्र बड़ा होवे, उसका मुण्डन करावे माता–पिता, इतना आनन्द आता है ?

कि नहीं.......बड़ा है.........

भला यज्ञोपवित पाता है पुत्र को, इतना आनन्द आता है ? कि नहीं...........इसी से बड़ा आनन्द है। कि अच्छा। पुत्र की शादी होवे, क्या कहा ? शादी पुत्र की, माता पिता करे जैसे पुत्र के शादी को माता पिता को आनन्द सुख आता है, वो ब्रह्मानन्द, आत्मानन्द इतना सुख है ? कि नहीं भाई बड़ा आनन्द है।

भला आप झूठे हो इससे (बड़ा) सुख दुनियाँ के अन्दर कहाँ होगा ?..........आप झूठे हो। इतना कहाँ सुख आया ? ये भगवान किसी ने देखिया है क्या ? ये आप झूठ बोलते हों।

कि नहीं भाई । आपने ब्रह्मानन्द देखिया नहीं है। कि अच्छा भला। पोत्रा पैदा होवे पोत्रा.........क्या कहा ?

पौत्रा, इतना आनन्द आता है, इतना आनन्द है ?

कि नहीं कहने लगे आप झूठे हो चले जाओ झूठे हो। चले जाओ। ऐ प्यारे ! आपने देखिया नहीं है। ये मिलेगा कैसे ?

जांका चित हरि चरनन लागे, विख सम जान विषय रस त्यागे। तांको सुख महान सत्गुरू देवत है।।

वो ब्रह्मानन्द का सुख देते हैं, प्रेम से बोलो हरे राम...

कहे टेऊँ गुरु जाप जपेजो, काम क्रोध में नाहिं तपे जो।
तांको पद निर्बान सत्गुरु देवत है।।

प्रेम से बोलो हरे राम....''**कहे टेऊँ गुरु जाप जपे जो।**''

जो गुर मन्तर जपता है काम, क्रोध, लोभ, अहंकार में जो तपायमान नहीं होता है। उसका हृदा शीतल हो जाता है।

तांको पद निर्बान निर्बाण पद अविनासी

जिसमें वाणी गम नहीं है। प्रेम से बोलो हरे राम....... वो पद प्राप्त होता है। ये सत्गुरु कृपा करते हैं। सत्गुरु कृपालु होता है न क्या कहा ? होता है....बड़े कृपालु होते हैं।

लाख प्याला भर पीया, चढ़ी न मस्ती नैन।
एक बूंद गुरुदेव की, जिस मस्त कियो दिन रैन।।

एक बूंद। ये विषयूं, भोग पदार्थ इसी में क्या है ? नशा ही है। प्रेम से बोलो हरे राम। ये सत्गुरु महाराज बड़ी कृपा करी। बड़ी शक्ति दास देखी ये संत बैठे हैं। ये बच्चेपने से छोटे–छोटे होके गुरु महाराज के चरणों में आया है। सेवाकरी है सारे को पता है। बड़ी शक्ति है प्रेम से बोलो रहे राम। है कहाँ सत्गुरु महाराज ?

''**विश्व व्यापक होय रहा तुम।**'' हे सत्गुरु महाराज। ये सारी विश्व में आप व्यापक हो। **जूनिं चराचर माहीं** (चेतन) में जड़ में, वृक्षों आदि में जो सुन्दरताई है। ये गुरु महाराज की है। ''**साखी चेतन अमर ज्योति, तुम्हरी है हरजाय जगती।**'' साखी चेतन जो सर्व में प्रकाश कर रहा है। वो संत बसन्तराम आपको सुनाया कि जानते हैं कि नहीं ? जानते हैं कि नहीं ? जानते हैं। साखी जानता है जानती तो बुद्धि है। क्या कहा ? बुद्धि को भी जानता है। उसका दर्शन करो।

देव उसी का कर मन दर्शन, जोई सबको देखत है।
गुप्त प्रकट जो पाप पुण्य का, अन्दर-बाहर पेखत है।
नभ जूं निर्मल-निर्गुण जामें, रूप रंग का रेखत है।
कह टेऊँ सो रूप तुम्हारा, महिमा जासु विशेषत है।

ये गुरु महाराज श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ ने ......जो हरे राम......ग्रन्थ साहब गुरु महाराज का, संतो ने बनाया है बड़ा ग्रन्थ है। उसी में कोई बंधन नहीं है। पढ़के.......भली जगह होवे तो भली स्थापन करें। न तो पढ़के कबट में रख देवें। प्रेम से बोलो हरे राम, खा तो तीस रुपया गया है। पर प्रेमियों के लिए पन्द्रह रुपये रख दिया है। प्रेम से बोलो हरे राम, उसी से फेर अलग छन्दावली, जैसे सुन्दर विलास है न ऐसे छन्दावली उहां रखी है। पुस्तक, ये चूड़ाला का, बिया दूसरा पुस्तक ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, सारे पुस्तक उहां रखे हैं। मदालसा की कथा रखी है। प्रेम से बोलो हरे राम।

गुरु महाराज की क्या शक्ति आपको सुनावें गुरु महाराज कहते हैं ''**उसी देव का कर दीदारा**'' जोई सबको देखत है। कौन देखता है ?

(प्रेमी का उत्तर) आत्मा

आत्मा में देखना, न देखना है नहीं प्रेम से बोलो हरे राम....

उसी देव का दीदार करो वो देखता है। देखता कैसे है ? बुद्धि के सहारे देखता है। बुद्धि के प्रकाश से। बुद्धि प्रकाश पाए बुद्धि देखती है। उसी आत्मा के प्रकाश को पाके बुद्धि प्रकाशती है। ये थोड़े आगे चलें फेर साक्षात् आप यहाँ दर्शन करो भगवान का। पर इसी चरम् के नेत्रों की विषय नहीं है। जो आजकल, इहां भी शायद वो पंध आया है कि नहीं ? पाखण्ड का महात्माओं ने खण्डन किया है बहुत।

कि आओ देखो इसी में भगवान। क्या ? देखो क्या है कि ये आकाश को भगवान बणाया है। ठहराया है ये आकाश जड़ है। आकाश से आप जानते हो कि नहीं? जितने बैठे हो.........

ये आकाश माना पोलार, आप जानते हो ?....हां जी ? जानते नहीं हो पोलार ? बैठे हो, ये आकाश आपको जानता है ?.............जड़ है प्रेम से बोलो हरे राम......

उसी देव का दीदार करो, पुण्य को, पाप को गुप्त प्रगट... किसी से न पाप करेगें छिपके, ठगी, दिल में तो कहते कि ठगी करता हूँ। पर लोभ के बस हो गया, मन के बस !

नभ जूं आकाश जैसे अन्तर भी है बाहर भी है। नहीं अन्तर है। नहीं बाहर है, निर्मल है, अविनाशी है। ये ब्रह्मज्ञान का दान सत्गुरु देता है। प्रेम से बोलो हरे राम

साखी चेतन अमर ज्योति, तुम्हरी है हर जाय जगती।
हर जाय, चौदह लोकों में जोत जग रही है। साखी चेतन की। वो सत्गुरु महाराज हैं। ये भी गुरु महाराज ने कहा है।

हरि.......साखी सृजनहार, सो थई जात असांजी।
ये गुरु महाराज ने कहा है।

पंजनि ततनि जो तन हीउ आहे।
तहिंमें आत्म सार, सा थई दाति अंसाजी।।
प्रेम से बोलो हरे राम............

ये पंजनि ततनि, पच्चीस प्रकृतियों का स्थूल शरीर है। इसमें आत्म, चेतन, साखी जिसकी जोत जल रही है। सर्व में प्रकाश कर रही है। वो हमारी दाति है। सुना ? गुरु महाराज कहते हैं– साखी, चेतन वो साखी अहं ब्रह्म।

"साखी ब्रह्म स्वरूप इक, नहीं भेद को गंध।
राग-द्वेष मति के धर्म, तांमे मानत अंध।।"
अठई पहिर अन्दर जोई, अखण्ड ज्ञान अपार।
सा थई बाति अंसाजी।।

गुरु महाराज खां पूछने लगे, जभी गुरु महाराज प्रेम सां चओ हरे राम। मण्डली लेके चला, जो सिन्धी हमारे है नजदीक उसको तो पता होगा, किसी शहर में गया तो भजन करते जाएंगे बजार से, यकतारा, ढोलक, बाजा, डण्डा जैसे ये बजा रहे हैं। चओ हरे राम कर ताल भी बजाते थे।

कहने लगे कि कौन है ? हिन्दू है, मुसलमान, पता नहीं कौन है ?

आप हैं कौन ?

गुरु महाराज कहे कि हमारी वो जात है। सुना **अस्ति भांति प्रिय स्वरूपा, अनभय सुख इसरार, सा थई शान्ति असांजी** कि अठई पहर अन्दर में ज्ञान हले थो, विवेक चलता है प्रेम से बोलो हरे राम......वो हमारी बात है। शिवोहम्, शिवोहम्।

"अस्ती भांति प्रिय, अनभय का जो सुख है वो हमारी शान्ति है। प्रेम से बोलो हरे राम।

"**कहता टेऊँ लोक टिन्ही में, चेतन जो चिमकार, सा थई कान्ति अंसाजी।** प्रेम से बोलो हरे राम......

कहता टेऊँ लोक टिन्ही में, "तीन लोक के अन्दर जो चेतन का चिमकार है ये हमारी कान्ति है, किरणां है। जिसमें चौदहा लोक प्रकाश कर रहे हैं। ये कृष्ण भगवान कहता है अर्जुन को। अर्जुन ! सूरज में प्रकाश वो मैं हूँ। अज्ञान जीव फेर कृष्ण भगवान पर दोष लगाते हैं कि ऐसे कैसे होगा ? वो कृष्ण भगवान कहता है कि मैं साक्षात ब्रह्म हूँ प्रेम से बोलो हरे राम...

"साखी चेतन अमर ज्योति, तुम्हरी है हर जाय जगती"

हे गुरु महाराज ये साक्षी चेतन ज्योति प्रकाश आप कर रहे हो सर्व घटों में। प्रेम से बोलो हरे राम तो गुरु महाराज.......मैंने बहुत शक्ति देखी। आपने क्या कहा दुनिया में आते हुऐ ? हरि ......

परम उदारी हो निष्कामी, सच का जा प्रचार करा।
सबकी हरि से प्रीत लाई, जांसे मन की दुर्मति दगती।
प्रेम से बोलो हरे राम...

परम उदारी, गुरु महाराज परम उदारी थे। ये आगे सुनाया था न। परम उदारी नाम किसका है ? अपने को दुख देके, दूसरे को सुख देवे उसका नाम है परम उदारी। उदारी, अपने को भी सुख दे दूसरे को भी ये उदारी। परम उदारी अपने का दुख दे के, दूसरे को सुख दे। ये.....

महापुरुष दुनियां में, बड़े काम को आते हैं।
मिटाते आपको हैं, और लाखों को बनाते हैं।।

हे गुरु महाराज, आप निष्कामी थे, रोटी की भी इच्छा किसी में नहीं थी गुरु महाराज की। निष्कामी होके सच का जो प्रचार करा। सच का प्रचार करने वाला दुनिया में बिल्कुल थोड़े हैं। प्रेम से बोलो हरे राम छो जो सच का न प्रचार करेंगे तो भेदवादी मजहबी दुख देंगे। सुना

कबीर सच का नगारा बजाया उसको जंजीर बाँध के गंगा में डुबाया। गुरु नानक साहिब सच का प्रचार करा, चक्की पिसाई, जेल के अन्दर। मन्सूर की खल्ल उतारी। बुल्लाशाह को कतल करा। शम्स तबरेज की खल्ल उतारी मन्सूंर को फांसी (सूरी) पर चढ़ाया। ईसामसीह को देखो। देखा है न गिरजा ? नत देखणा कीले लगायी हैं, हाथों में, पांव में, मजहबियों ने। स्वागी दयानन्द महाराज को जहर दिया। सच्ची जे न बात करता है। उसको दुःख देंगे।

महाराज ! दुख क्यों देंगे ?

दुःख कौन देगा ?

सचियालोकां नूं दुख दें दें, मजहब पन्था वाले जी।
सूरी चढ़ावन खल्ल उतारन, दें दें जहर दें प्याले जी।।
महिंणा तानां झिड़का मारिन, कह दें वचन कराले जी।
"धर्मदास" जीयां दे वेरी, मुइयां करन उजाले जी।।

पर सच दे नाल प्रीत जिना दी, हरगिज झूठ न कहं दे जी।
पाहंण वांगुरु हमेशा कायम, लख-लख चोटा सहंदे जी।।
अतुर मुश्क दें गाहक जहड़े भगिंया कोल कि बहन्दे जी।
''धर्मदास'' मंसूर सूलीयां कहदें सच्च न मुड़ंदे जी।।

प्रेम से बोलो हरे राम, सच्चे आदमी को दुख होगा। जो न दुनिया के अन्दर सच्चा आदमी होगा। धर्मात्मा होगा, सत्यवादी होगा, पर उपकार करेगा, सेवा करेगा, तो उसको दुःख होगा, गरीब होगा और कुछ न कुछ तकलीफ होगी। ये कायदा है प्रेम से बोलो हरे राम।

मजहबी भेदवादी झिड़का मारेंगे, अन्त में मारने के लिए तैयार होगा। सच का उपदेश....

जो जन के बंधन हरे, सो साधू कोई एक।
क्रिया कर्म जोड़ने विखे, जन समरत्थ अनेक।

जो जन के बंधन काटे जो बंधन काटे वो कोई एक है। बांकी कर्मो में, पूजा में बहुत करेंगे। प्रेम से बोलो हरे राम कैसे ?

दादुर कर कुखि भरन में, तत्पर नांग अनेंक।
समर्थ धरनी धरन में, शेष नाग ही एक।।
तेसे उदर भरण में तत्पर भये, भेखी सन्त अनन्त।।
जगत जलधि के तरण में, विरला को इक सन्त।।

ये जल निधि (सागर) है। इसके तारनें में कोई कोई महात्मा है।

शैले-शैले न माणिकं, मुक्ताकं न गजे-गजे।
सज्जनः न हि सर्वत्र, चंदन न वने-वने।।

दुर्लभ महात्माऊँ होते है सच्चा। जभी सच का प्रचार करा, ''सबकी हरि से प्रीत लाई।'' जिससे मन की दुर्मति खोटी मति जल जावें। सारे प्रेमियों की प्रभु से प्रीत लगाई। संसार से प्रीत तोड़के अन्तर्यामी (प्रभु) में प्रीत लगाई। अपने धर्म में प्रीत लगाई, सत्मार्ग में चलाया। जभी चलाया तो क्या हुआ ? मजहबी, भेदवादी खड़ा हुआ। हरि... मजहब वाले भेदवादियों, तुम्हें बहुत सताया।

लोक निंदा दुख सहारा, अटल होई आप की भक्ति।।

मजहब वाले भेदवादियों झूपडियूं जलाए छदि्यूं। खूह–बाग गिराए छदि्या। गुरु महाराज मौज में प्रेम से बोलो हरे राम.........कभी गमगीन नहीं हुआ। मौज में..... ''लोक निंदा दुःख सहारा, भक्ति अटल हुई।'' कभी डुलायमान नहीं हुआ, जैसे सुमेरु अटल होता है। तो सुमेरु जैसे अटल हुई।

हरि...''सर्वानन्द'' सर्व हितकारी, सोया जीव जगाया।
कंवल जैसे रहा न्यारा, हरि की माया ना कुछ तुझ लगती।।
सत्‌गुरु टेऊँराम तेरी, मैंने देखी महान शक्ति।।

प्रेम से बोलो हरे राम.....''सर्वानन्द सर्वहितकारी'' गुरु महाराज सारे का हितकारी था, किसकी दिल न ही दुखाई, सच्ची करे पूछो। सारे का हितकारी, ''सोया जीव जगाया''। जो अविद्या के नींद में, अधर्म में सोया था। उसको जगाया कि जागो। भाइयों जागो। ये जागने का मौका है, जागो। अपने धर्म में, सत्मार्ग में, अपने निज स्वरूप में जागो। प्रेम से बोलो हरे राम.......हे भगवान्। कंवल फल जैसे न्यारा रहा, जैसे कंवल फूल जल में रहता है। उसको पानी स्पर्श नहीं करता है तैसे माया हरि की आपको नहीं लगी। आप निर्लेप रहे। असंग रहे माया के अन्दर प्रेम से बोलो हरे राम.........गुरु महाराज की शक्ति अपरम्पार है। जितने प्रेमी बैठे हो। ये अपरम्पार जिसमें शक्ति है, वो ही आत्मा का ज्ञान देते हैं। कौन ? महात्मा !... जैसे चूड़ाला, राजा शिखरध्वज। दिल में कहता है। ये आत्म ज्ञान कहाँ मिलेगा ?

बादल बिन ना बरखा जैसे, शशि बिन मिले न धाना रे।
हाट बिना ना सौदा तैसे, गुरु बिन मिले न ज्ञाना रे।।

अभी सत्‌गुरु के पास जावें। किसी महात्मा तत्ववेता के पास जावें। ब्रह्मज्ञान के लिए। ये वीचार कर रहे हैं सुना ?

ये कथा ईहां रख देता हूँ। गुरु महाराज की शक्ति ''सत्‌गुरु किसका नाम है ? ये दो बात रह गयी क्यों कि बाकी दस मिनट है। देरी ठीक नहीं है, टेम–नेम से अच्छा है, आप भी टेम–नेम से आओ। आप कुछ देरी से आते हो। नहीं प्रेम से बोलो हरे राम......ये टेम–नेम से आओ, अपना कीमती वख्त अर्पण करो तो कीमती चीज पाओ, सुना इसलिए टेम–नेम से आना ये चार वचन सुणा है इसका विचार करना। राम की धुनि लगाओ।

*संकलन–**ज्योति खत्री**,* जयपुर

प्रश्नोत्तर माला

क्या आप जानते हैं ?

सही उत्तर ढूंढे

अनंत श्री विभूषित सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जीवन चरित्र से संबंधित प्रश्न

१. सत्गुरू सर्वानन्द जी महाराज का जन्म किस सन् में हुआ था ?
(अ) १८६७ (ब) १८६६
(स) १८६१ (द) १८८०

२. महाराज श्री के मामाजी कौन थे ?
(अ) स्वामी टेऊँराम जी महाराज
(ब) स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज
(स) स्वामी हरिदासराम जी महाराज

३. महाराज श्री का जन्म किस नगरी में हुआ था ?
(अ) खण्डू (ब) चक
(स) खाई (द) भिट्टशाह

४. महाराज श्री के मामा कितने थे ?
(अ) १ (ब) २
(स) ३ (द) ४

५. महाराज श्री को किस नदी का किनारा अतिप्रिय था ?
(अ) जमुना (ब) गंगा
(स) गोदावरी (द) सरस्वती

६. स्वामी गुरमुखदास जी महाराज को सतगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज में किस भगवान के दर्शन हुए थे ?
(अ) श्री कृष्ण (ब) श्री राम
(स) भगवान शंकर (द) भगवान विष्णु

७. महाराज श्री ने किस क्षेत्र में तपस्या की थी ?
(अ) काशी (ब) ऋषिकेश
(स) अमृतसर (द) हरिद्वार

८. स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने किस उम्र में श्री श्री १०८ सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज से नाम दीक्षा ली थी ?
(अ) १८ वर्ष में (ब) २० वर्ष में
(स) २२ वर्ष में (द) १६ वर्ष में

९. सत्गुरू सर्वानन्द जी महाराज की पुजनीय नानीजी कौन थीं ?
(अ) ईश्वरी देवी (ब) माता जुगल देवी
(स) माँ कृष्णा देवी (द) माता मीता देवी

१०. महाराज श्री के साथ उनके एक परम मित्र ने भी मंत्र दीक्षा ली थी। उनका नाम क्या था ?
(अ) बाबा गणेशानंद जी महाराज
(ब) स्वामी बसंतरामजी महाराज
(स) स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज
(द) स्वामी गुरमुखदास जी महाराज

११. महाराज श्री के बचपन का नाम क्या था ?
(अ) भगतू (ब) हरचू
(स) सीरू (द) खैराज

१२. महाराज श्री के दादाजी का नाम क्या था ?
(अ) चेलाराम जी (ब) आसूराम जी
(स) आसूदोराम जी (द) विशनदास जी

१३. महाराज श्री ने भारत आकर सबसे पहले कहाँ प्रेम प्रकाश आश्रम की स्थापना की ?
(अ) हरिद्वार (ब) अहमदाबाद
(स) जयपुर (द) उल्हासनगर

१४. महाराज श्री के जीवन के सबसे आनंददायी क्षण कौन-से रहे होंगे ?
(अ) संन्यास लेते समय
(ब) गुरू दीक्षा लेते समय
(स) आत्म साक्षात्कार समय

प्रस्तुति–**प्रेमप्रकाशी राधा ठारानी**, ग्वालियर

सद्गुरु शान्ति प्रकाश महिमा

गुणगान

तर्ज :- जन्म लही अजु ॼोगी आयो।

थलु :- जन्म दीहुं जोॻीअ जो मनायो।।
देह धरे धरतीअ ते स्वामी, शांति प्रकाश आ आयो।
१. रक्षाॿंधन ॾीहं मंगल जो, सावण पूरण मासी।
सिंध देश जे चक नगरीअ में, प्रभु पाण पधारियो।।
२. पिता आसूदाराम आ जंहिंजो, संत सेवी निष्कामी।
जीजल जुॻल जॻत खां न्यारी, तंहिं घर सत्गुरु आयो।।
३. नंढिपण खां घरॿार त्याॻे, सत्गुरु शरणी आयो।
नाम वठी स्वामी टेऊँराम खां, पाण जपियो ऐं जपायो।।
४. गुरु कृपा सां मिटियो अंधेरो, अनभइ अखिड़ियूं खुलियूँ।
जॻत समूरो फानी ॼाणी, सब खे नाम जपायो।।
५. सत्गुरु सर्वानन्द साहिब जी, गादी जंहि हुई वसाई।
देश विदेश में प्रेम प्रकाशी, झण्डो जंहिं त झुलायो।।
६. जॻतर जे कल्याण करण लई, सत्गुरु आयो अवतारी।
मिठड़ी ॿाणी ॿोले सभ सां, सब खे गले लॻायो

–सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज

तर्ज :- मुहिंजो नीहुँ लॻो मंदलाल सां,

थलु :- स्वामी शांति प्रकाश महान आ, ॼण सचपच ही भॻवान आ।
१. शंकर वांगे ध्यान लॻाये, सत्‌नाम साखी नाम जपाए।
जंहिं तारियो सॼो त जहान आ।।
२. विष्णु रूप थी पाले सभ खे, दीन गरीबनि मुहताजनि खे।
ॾिनो अन्न धन ऐं सामान आ।।
३. ब्रह्मा थी जहिं ज्ञान सुणायो, प्रेम प्रकाशी शान वधायो।
कयो वेदनि जो वखियाण आ।।
४. कृष्ण जीअं कई गायुनि सेवा, ॾिनो सभनि खे मिठड़ा मेवा।
ॾिनों सभखे गीता जो ज्ञान आ।।
५. राम ज्यां रखपाल थियाँ से, संतनि में सिरमोर हुआ से।
ॾिनो सभखे जहिं सन्मान आ।।
६. दास अशोक छा महिमा ॻाए, चरननि में थो सीसु निवाए।
जिन तां तन मन धन कुर्बान आ।।

–स्वामी अशोक प्रकाश जी

तर्ज :- पल पल याद पवे थो मूंखे।

थलु :- परम ज्ञानी परम ध्यानी, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश।
१. पर उपकारी पर दुखहारी पर सुखकारी सत्गुरू हो।
परम उदारी परम भण्डारी, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश।।
२. दीन दयालु परम कृपालु, करे निहालु सत्गुरु थो।
सब प्रतिपालू सब रखपालू, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश।
३. परम प्यारो सदा न्यारो, सब जो सहारो सत्गुरु हो।
सदा बहारो गुल गुलजारो, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश।
४. सर्वस्नेही नाम जो नेही, दिल में वेही सत्गुरु थियो।
अशोक आयो धारे देही, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश।।

–स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज

तर्ज :- साजन मेरा उस पार है

थलु :- सत्गुरु शांति प्रकाश आ, सभनी सुखनि जी रास आ।
१. सिंध जी धरती सूंहारी आ, चक जी नगरी भाॻनि वारी आ,
जिते जोॻिनि जो वास आ, सभनी सुखनि जी रास आ।
२. धन–धन पिता भाॻ वारो आ, माता जो भाॻ भी भलारो आ,
तिनजे अङण थियो हुल्लास आ, सभनी सुखनि जी रास आ।
३. नंढपिण खां संतनि जे संग में, मन खे रंगियो राम रंग में,
कयो भक्तिअ जो विकास आ, सभनी सुखनि जी रास आ।
४. सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी, सेवा कई सुखधाम जी,
गुरु भक्ति कई खास आ, सभनी सुखनि जी रास आ।
५. सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द सां, नीहुं निभायो आनन्द कंद सां,
थियो प्रभुअ दर पास आ, सभनी सुखनि जी रास आ।
६. सत्गुरु जी गादी वसाई आ, सत्संग जी मौज मचाई आ,
प्रेमिनि जी पूरी कई प्यास आ, सभनी सुखनि जी रास आ।
७. जोति मां जोति जॻाए वियो, स्वामी हरिदासराम में समाए वियो,
मनोहर अजब इतिहासु आ, सभनी सुखनि जी रास आ।

–संत मनोहरलाल जी

तर्ज :- दूलह दरियाह शाह मुहिंजी।

थलु :- स्वामी शांति प्रकाश सांई, हिरदे जोति जॻाइजां।
हिरदे जोत जॻाइजो, सांई मूंखे कीन भुलाइजां।।
१. भवसागर मां पार करण लई, सांई तूं मल्लाह आहीं
तरी न ॼाणां आउं अयाणी, ॿांह ॾई त [illegible]

२. लखे भलायूं आहिनि अव्हांजूं, हीं भी नगंड़ो निभाइजो।
सांई पंहिंजीअ महिर मया सां, जन्म मरण खां छदाइजो।।
३. पतित पावन नालो अव्हांजो, दया जी दृष्टि धारिजो।
दास ब्रह्मानन्द बार पुकारे, तंहिंखे कीन विसारिजो।।

–स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

तर्जः- दिल लूटने वाले

थलु :–मुंहिंजो सत्गुरु शांति प्रकाश सदा, सभ संतानि में सोभारो आ।
अजु जन्म उन्हींअ जो मल्हायूं था, जो सिंधू नगर जो जियारो आ।।
१. आहे मुंह में संदत्रि अद्भुत मणिया, जुण पाण कृष्ण जो रूप बणिया।
गुण कहिड़ा गुणे कहिड़ा गुणियां, प्रेमिनि जो प्रल्न प्यारो आ।।
२. जेके शरण गुरूअ जी आया थी, थिया भागु उन्हनि जा सबाया।
तिनि चार पदार्थ पाया थी, गुरु लोक त्रिन्ही रखवारो आ।।
३. अचो भाउर भेनरु सभई मिलीं, कयूं सेवा सत्गुरु जी त मिली।
दींदो मुक्ति सभनी खे खिली खिली, इहो भवजल तारणहारो आ।।
४. जंहिंजो भक्ति ऐं ज्ञान विशाल अथई, जंहिंखे दीन दुखियुनि जो ख्याल अथई।
इहो अन्दर ब्राहिरि लाल अथई, प्रभू सब सां मिलयल ऐ न्यारो आ।।

कवि प्रभुदासजी

तर्ज :- मुंहिंजो गुरु त पीरनि जो पीरु आ।

थलु :- मुंहिंजो गुरु त गरीब निवाज आ,
स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज आ।
कंदो संगति सजीअ ते ब्राझ आ,
सागियो हीऊ श्याम सुन्दर–२ मुंहिंजो सत्गुरु।।
१. जंहिजे रग रग में श्री कृष्ण, जंहिंजे तन मन में मन मोहन।
प्रेम जो सागर आ, मुंहिंजो सत्गुरु.......।।
२. जंहिंजी ब्राणीअ में आनन्द आ, जुण सागियो मुरली मुकुंद आ।
भजुन जी मौज करे, मुंहिंजो सत्गुरु.......।।
३. जंहिंखे गायूं पयूं त पुकारिनि, खणी न्याणियूं नेण निहारिनि।
सभिनी जी सार लहे, मुंहिंजो सत्गुरु......।।
४. जंहिंजो अमरु नारायण नालो, आहे शंकर शान निरालो।
करे आसीस सदा, मुंहिजो सत्गुरु.........।।

–शंकर नारवानी, अजमेर

तर्ज :- मुंहिंजो गुरु त पीरन जो पीरू आ।

थलु :- स्वामी शांतिप्रकाश दयाल आ।
सदा नग रखदो नगपाल आ, परम सुखकारी आहे, मुंहिजो सत्गुरु।।
१. जंहिं प्रेम जो प्यालो पियारियो, जंहिं ततल दिलियुन खे ठारियो।
सदा सुखकारी आहे, मुंहिंजो सत्गुरु।।
२. जंहिं मण्डल जो शान वधायो, पंहिंजी कला सां जगुत झुकायो।
कामिल कलाधारी आहे, मुंहिंजो सत्गुरु।।
३. लख थोड़ा तंहिंजा आहिनि, अजु भी पिया नगड़ो निभाइनि।
लीला तिन न्यारी आहे, मुंहिंजो सत्गुरु।।
४. निर्बल जो सांई बुल आ, बुलु तिनि जो श्याम अटल आ।
भक्त हितकारी आहे, मुंहिंजो सत्गुरु।।

–संत श्यामलाल, उल्हासनगर

तर्ज :- रेशमी सलवार कुर्ता जाली का.........

थलु :- स्वामी शांतिप्रकाश कृष्ण मुरारी हो।
कर्म उपासना ज्ञान जो भण्डारी हो।
१. सत्संग जी रास रचाई, ऐं प्रेम जी मुरली बजाई,
मिड़ी आया मड़द ऐं माई, तन मन जी सुधि विसराई।
अजब लीलाधारी हो..........
२. गीता जो ज्ञान बुधायो, निज करम धरम में लगायो,
भरमनि जो भूत भजायो, आतम जो बोध करायो।
ब्रह्मविचारी हो.............
३. गायुनि जो हो रखपालू, हुयो गरीबनि जो कृपालू।
हुयो सत्गुरु दीन दयालू, ऐं प्रेमिनि जो प्रतिपालू।
पर उपकारी हो..........
४. "राजू" छा महिमा गायां, मां सेवक तिनिजो आहियां।
चरननि में सीसु झुकायां, ऐं सदा ईएं थो भायां।
गुरु अवतारी हो........

संत राजूराम जी, बड़ोदा

तर्ज : होठों से छू लो तुम......

थल : मेरे सत्गुरु शांतिप्रकाश, शरणागत मैं तेरी।
प्रभु आप मुझे मिल गये, खुल गई किस्मत मेरी।।
१. अज्ञान अंधेरे से, दिन रात मैं भटक रहा,
मुझको न सूझ पड़ी, माया में अटक रहा।
जब कृपा दृष्टि करी, कटी जन्म मरण फेरी।।
२. प्रभु प्रेम प्रकाशी हो, तुम सब सुख राशी हो,
तुम ज्ञान के सागर हो, और योग अभ्यासी हो।
जप रोम-रोम से राम, बन गई दुनियां चेरी।।
३. गुरूओं के रखवारे, वृद्धों के सहारे हो,
संतों के प्यारे हो, सत्गुरु के दुलारे हो।
करुणा करने में प्रभु, इक क्षण ना करो देरी।।
४. जो शरण तेरी आया, उसे पार है पहुँचाया,
"प्रताप" कहे गुरुवर, मैं शरण तेरी आया
सदा [illegible] मैं गाता रहूँ, चाहे दुनिया बने वैरी।।

–संत प्रतापराय, मुरैना

तर्ज :- ऐ मेरे दिल ए नादां......

थलु :- सुनो अर्ज मेरा गुरुवर, तेरा पावन प्यार मिले।
स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज, तेरा आधार मिले।।

१. मैंने तो सुना जब से तुम प्रेम के सागर हो,
जो शरण आये तेरी भर देते गागर हो,
मेरा जीवन है खाली, तेरी भक्ति अपार मिले।

२. सब छोड़के दुनिया को, मैं शरण पड़ा तेरी,
करदो कृपा मुझ पर, बन जाऊँ तव चेरी,
हर क्षण मुझको तेरा, पावन दीदार मिले।।

–प्रेम प्रकाशी दिलीप

तर्ज : तुम दिल की तमन्ना हो...........

थलु : सारी दुनिया के स्वामी हो, तुम अन्तर्यामी हो।
शांति प्रकाश जी, तुम कृष्ण मुरारी हो।।

१. छोड़के मैं सारा जहाँ, दर पै तेरे आया हूँ।
सत्गुरु मेरे विनती सुनो, चरणों में तेरे आया हूँ।
बिठा ले अपनी शरण में, कि दास तुम्हारा हूँ, शांतिप्रकाश।।

२. मन लगी है लगन तेरी, दर्शन चाहूँ शाम सवेरे,
छोड़ूंगा ना दर को तेरे, आस पुजा दो मन की मेरे।
सुनो दो अपनी बंसी को, मेरे दिल की तमन्ना है शांतिप्रकाश

३. उल्हास नगर अमरापुर धाम, शांतिप्रकाशजी संत महान।
दीन दुखी को देते दान, करते वो सबका कल्याण।
"सोनी" दर तेरे आता रहे, तेरी महिमा गाता रहे।।

--सोनी जी, मुरैना

सद्गुरु शांतिप्रकाश महिमाष्टक (दोहे)

१. जगहितकारी जगत में, देखा संत विशाल।
सत्गुरु शांतिप्रकाश जी, दाता दीन दयाल।।

२. धर्म रूप बने धरनि पै, करने धर्म प्रचार।
सत्गुरु शांति प्रकाश को, वंदन बारम्बार।।

३. पतितों की पीड़ा हरे, दुखियों के दुख दूर।
सत्गुरु शांतिप्रकाश जी, करत कष्ट काफूर।।

४. सत्गुरु शांतिप्रकाशजी, करते पर उपकार।
दीन हीन निर्बल दुखी, पातक अधम उद्धार।।

५. भक्तों की भयता हरे, भरम करे चक चूर।
सत्गुरु शांतिप्रकाशजी, दे आनन्द भरपूर।।

६. परम प्रेम के पुंज है, परम मनोहर रूप।
सत्गुरु शांतिप्रकाश जी, माधुरी मधुर स्वरुप।।

७. सत्गुरु शांतिप्रकाश की, बड़ी अनोखी बात।
सरल सरस सुखरूप है, मधुर–मधुर मुस्कात।।

८. सत्गुरु शांतिप्रकाश जी, आप सर्व आधार।
भवजल भारी लहर से, मोहि करो प्रभु पार।।

नित्य दोहों का पाठ कर, मन में होत हुलास।
सुमति दान देवें सबहिं, सत्गुरु शांतिप्रकाश।।

–विनीत : प्रेम प्रकाशी दिलीप

कुम्भ मेला छावनी में सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज का जन्मोत्सव धूम-धाम से सम्पन्न

स्वामी टेऊँराम, प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र, श्री अमरापुर धाम, डांडोरी नाका, पंचवटी, नासिक में युग पुरुष अनाथ वत्सल अर्चनीय वन्दनीय सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज का ६७ वां प्राकट्य महोत्सव पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता में बड़े ही धूम–धाम के साथ मनाया गया। १२ अगस्त नारियल पूर्णिमा, रक्षा बन्धन के दिन सायं ६ से ८ बजे तक विशेष सत्संग सभा में सन्त शिरोमणी पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, सन्त जयदेव जी, सन्त अनन्त प्रकाश जी, सन्त हरिओम प्रकाशजी, सन्त प्रतापराय के पावन सानिध्य में बड़ी संख्या में उपस्थिति प्रेमियों ने जन्मोत्सव का आनन्द लूटा। दीप प्रज्जवलन व शुद्ध मावे के बने केक को काटकर सन्त मण्डल व प्रेमियों का मुंह मीठा कराया गया। इसी प्रकार श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान, दिल्ली के श्री प्रेम प्रकाश धाम, ग्वालियर सहित देश के समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में सदगुरु महाराज का ६७ वां जन्मदिवस १२ अगस्त को व ११वीं पुण्यतिथि उत्सव १४ अगस्त को मनाया गया। इण्डोनेशिया जकार्ता के प्रेमियों ने सन्त राजूराम जी, सन्त चरणदास जी के सानिध्य में जन्मोत्सव का आनन्द प्राप्त किया। लासपासमास (स्पेन), हांगकांग, अमेरिका, कनाडा सहित विश्व के अनेक देशों में रह रहे प्रेमियों ने भी सदगुरु महाराज का जन्मोत्सव व पुण्य तिथि दिवस श्रद्धा भक्ति व उमंग के साथ मनाया। *--कार्यालय डेस्क से*

कीर्तन-धुनि व दोहे-श्लोक

अनंत श्री विभूषित युग पुरुष पूज्य सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के मुखारविन्दु से सत्संग प्रवचनों के मध्य निःसृत अमृतरस।

पूज्य महाराज श्री कलिपावनावतार थे। पूज्य गुरुदेव का यह पक्का विश्वास था कि इस कलियुग में भगवत नाम ही ऐसी अमोघ औषधि है जिसके सेवन करने से जीव जन्म–मरण के दुःखों से निवृत होकर पूर्ण स्वस्थ बन सकता है। अतः इसी उद्देश्य से पूज्य महाराज श्री सत्संग प्रवचनों के मध्य में मधुर–मधुर कीर्तन व धुनियाँ अपने श्री मुख से प्रवाहित करते थे। उस समय पूज्य महाराज श्री स्वयं भी कीर्तनमय हो जाते थे और प्रेमीगण इस परम रस का आस्वादन कर झूम उठते थे। हम अभी भी ऐसे रस का आस्वादन करें। इस लेख के माध्यम से :–

सत्संग आरम्भ करने से पूर्व मंगलाचरण व धुनिः–

ओऽमकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओऽमकाराय नमो नमः।।
सर्व स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भय भाना।
अंत न ऊपं छाय न धूपं, काढ़त कूपं धरध्याना।।
रहस्यारामं दायक धामं, नित निष्कामं निर्बानी।
पाद न मामं निशिदिन शामं, श्री टेऊँरामं गुरुज्ञानी।।
सभई चओ ह ऽऽऽ री ऽऽऽ ओ ऽऽऽ म्,
हाणे प्यार सां अैं वद॒ आवाज़ सां भग॒वान अैं।
गुरु महाराज अैं सन्तनि जी जय चओ।।

बोल राम कृष्ण भगवान की जय। शंकर भगवान की जय। श्री गुरु नानकदेव की जय। सत्गुरु टेऊँराम महाराज की जय। सत्गुरु सर्वानन्द महाराज की जय। भारत मण्डल की जय। सभनी संतन की जय। आयोलाल सभई चओ झूलेलाल।

कीर्तन (धुनि) :-

गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय,
गोविन्द जय जय, गोपाल, जय जय।
राधा रमण हरि, गोविन्द जय जय,
श्रीराधा रमण हरि, गोविन्द जय जय।।

प्यारे सां चओ – सत्नाम साखी, सत्नाम साक्षी, जय श्री कृष्ण।

गुरु महिमा की धुनि :-

चरण कमल तेरे धोये धोये पीवां, सत्गुरु दीन दयाला।
सत्गुरु दीन दयाला, मेरे सत्गुरु दीन दयाला।
वाह वाह चरण कमल तेरे धोये धोये पीवां, मेरे सत्गुरु दीन दयाला।

साध संगत में मिलकर बोले, सत्गुरु का जयकारा।
सत्गुरु का जयकारा, बोलो सत्गुरु का जयकारा।
हां हां, साध संगत में मिलकर बोलो सत्गुरु का जयकारा।

सत्गुरु साहेब संत मिलाया, सत्गुरु साहेब संत मिलाया।
जाग॒या भाग॒ हमारा प्यारीइये, जाग॒या भाग॒ हमारा प्यारीइये।
सत्गुरु साहेब संत मिलाया, सत्गुरु साहेब संत मिलाया।

थिर कर बैठो गुरुमुख प्यारे, थिर कर बैठो गुरुमुख प्यारे।
सत्गुरु तुम्हरे काज संवारे, सत्गुरु तुम्हरे काज संवारे।
थिरकर बैठो गुरमुख प्यारे, थिरकर बैठो गुरुमुख प्यारे।

सत्संग महिमा धुनि :-

आज दी घड़ी हर रोज रोज होवे, आज दी घड़ी हर रोज रोज होवे।
गुरुमुख चात्रिक अमृत पीवे, गुरुमुख चात्रिक अमृत पीवे।

आज दी घड़ी हर रोज रोज होवे, आज दी घड़ी हर रोज रोज होवे।

◆◆◆

सन्त जना मिल हरि जस गावो, सन्त जना मिल हर जस गावो।
कोटि जन्म के दूख गवाओ, कोटि जन्म के दूख गवाओ।
सन्त जना मिल हर जस गावो, सन्त जना मिल हर जस गावो।

◆◆◆

गंगाजी की महिमा धुनि :-

जय गंगे जय गंगे, जय जय गंगे नाम भज मन जय गंगे।
बोलो, जय गंगे जय गंगे, जय जय गंगे मात भज मन जय गंगे।

◆◆◆

हर हर महादेव शम्भू, काशी विश्वनाथ गंगे।
काशी विश्वनाथ गंगे, काशी अमरनाथ गंगे।
ओ-हर हर महादेव शम्भू, काशी विश्वनाथ गंगे।

◆◆◆

सत्संग के बीच में लगने वाली धुनियाँ व कीर्तन की झलकियाँ :-

१. नन्दलाला गोपाला मोहन मुरली वाला
मोहन मुरली वाला, कृष्ण बन्सी वाला
ठाकुर बन्सी वाला, नन्दलाला गोपाला
मोहन मुरली वाला।

२. कृष्ण प्यारे की जय, मोहन प्यारे की जय
कृष्ण प्यारे की जय ओ मोहन प्यारे की जय
कृष्ण प्यारे की जय मोहन प्यारे की जय

३. जय राधे जय राधे बोलो जय राधे जय राधे।
जय जय राधे श्याम, भज मन जय राधे।

४. श्री मन्नारायण नारायण नारायण।
भज मन नारायण नारायण नारायण।

५. जप मेरी रसना राधेश्याम जप मेरी रसना राधेश्याम।
राधेश्याम, सुन्दर श्याम, राधे श्याम सुन्दर श्याम।
जप मेरी रसना राधेश्याम, जप मेरी रसना राधेश्याम।

६. राधे राधे गोबिन्द गोबिन्द राधे,
राधे राधे गोबिन्द, गोबिन्द राधे।
गोबिन्द राधे, गोपाल राधे,
ओ राधे राधे गोबिन्द गोबिन्द राधे।।

७. असां राम जा, राम असांजो, फर्क न तहिंमें कोई अदा।
फर्क न तहिं में कोई अदा, फर्क न तहिंमें कोई अदा।
असां रामजा राम असांजो, फर्क न तहिंमें कोई अदा।

८. जय गोबिन्दा जय गोपाला, जय गोबिन्दा जय गोपाला।
मुरली मनोहर जय नन्दलाला, मुरली मनोहर जय नन्दलाला।।

९. राधा रानी की जय, महारानी की जय।
ओ राधा रानी की जय, महारानी की जय।
राधा रानी की जय, महारानी की जय।

१०. मुरलीअ वारो, चओ मुरलीअ वारो
ईहो मखण जो चोर थई, मुरलीअ वारो
ईहो गायिंन जो गोपाल थई, मुरलीअ वारो
ईहो कृष्ण कृपाल थई, मुरलीअ वारो
ईहो यशोदा जो लाल थई, मुरलीअ वारो
ईहो नेही नंगपालु थई, मुरलीअ वारो
ईहो राधा जो प्यारो थव, मुरलीअ वारो
ईहो ब्रिज जो सहारो थव, मुरलीअ वारो

संकलन : प्रेम प्रकाशी दिलीप

पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज जोधपुर में

जोधपुर :- रविवार २० जुलाई को प्रातः १०:१५ बजे हावड़ा एक्स. से जोधपुर पहुँचने पर सन्त शिरोमणी पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज का रेल्वे प्लेटफार्म पर उपस्थिति सैकड़ों प्रेमियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इसी दिन सायंकाल को प्रताप नगर स्थित सत्नाम साक्षी भवन में पूज्य स्वामी जी ने अपने अमृतमयी उपदेशों से जोधपुरवासियों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। २१-२२ जुलाई तीसरी पुलिया चौपासिनी स्थित प्रेम प्रकाश मन्दिर में पूज्य स्वामी जी के प्रवचनों की ज्ञानगंगा में प्रेमियों ने डुबकी लगायी।

२३ जुलाई आज **पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज का ६० वाँ जन्मदिवस है** जिसे जोधपुरवासियों ने पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में ही १६ सेक्टर स्थित सामुदायिक हॉल में बड़ी संख्या में उपस्थित होकर विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया। इस अवसर पर स्वामी जी का जोधपुरी साफा पहिनाकर अभिनन्दन किया गाय। शिवमण्डली द्वारा सायं ५:३० बजे से भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। अन्त में श्री अमरापुर दरबार जयपुर द्वारा आयोजित दोहास्मरण प्रतियोगिता में सम्मिलित जोधपुर के प्रेमियों को प्रमाण पत्र व पुरस्कार देकर आशीर्वाद दिया।

भक्ति के साधन

अनंत श्री विभूषित युग विभूति पूज्य सद्‌गुरु शांतिप्रकाश जी महाराज के श्रीमुख से निःसृत साधना सूत्र।

१. भजन करने का तरीका

श्री रामकृष्ण परमहंस के पास कुछ महात्मा लोग आये, पूछा कि आप कैसे भजन करते हैं, जो इतनी बड़ी मंजिल पर पहुँच गये हो ? आप प्रभु के अत्यंत प्यारे बन गये हो ?

रामकृष्ण उन महात्माओं को जवाब न देकर तुरन्त वहाँ से उठकर अंदर कुटिया से एक पोथी ले आये और उसे आकर संतों के हाथ में दे दी।

सन्तों ने उसे खोलकर देखा तो उस पुस्तक में प्रारम्भ से अन्त तक सिर्फ राम नाम के अलावा और कुछ भी नहीं लिखा था। रामकृष्ण ने कहा बस मैं सिर्फ यही याद करता रहता हूँ, संतों ने कहा यह तो हम भी करते हैं भाई।

रामकृष्ण ने कहा– हाँ आप भी करते होंगे– सिर्फ होठों से। तो फिर आप कैसे कहते हैं– संतों ने पूछा।

मैं तो समग्रता से कहता हूँ यानी केवल होठों से ही नहीं इसके साथ दिल को भी जोड़ता हूँ।

२. परमात्मा का भय रखना चाहिये

आदमी कितना भी पढ़ा लिखा क्यों न हो जाये। बड़ी पहुँच वाला हो जाये, बड़े नाम वाला हो जाये, परन्तु उसे परमात्मा का भय रखना चाहिये।

भाई वो बड़ी सरकार है और बेपरवाह सरकार है। पता नहीं उसे किस समय क्या अच्छे लगे ?

इसलिये हर समय ऐसे बोलो राम SSSS राम। राम SS राम। जय श्री कृष्ण। जय श्री कृष्ण। सत्‌नाम साक्षी। इसलिये कहते हैं– **साहेब जे सरकार जो, भय भाईदें, सुख पाईदें, साजन हिन संसार में।**

३. भक्ति के सूत्र–शाह लतीफ

हमारे सिंध में शाह लतीफ नाम के बड़े फकीर हुये हैं। वे एक दिन बैठे बैठे रो रहे थे, तो जिज्ञासुओं ने (शिष्यों ने) पूछा क्यों–

तती रोये सभका-रती रोये छो ?

तती – यानी जो विकारी पुरुष हैं, जो संसार के विषयों से ग्रस्त हैं, वो रोये तो कोई बड़ी बात नहीं, आप तो उस प्यारे तक पहुँचे हुये हो, आपकी तो नस नस में राम नाम के सिवाय और कुछ है भी नहीं। फिर आपको तो आनन्दित रहना चाहिये अप्प फिर रो क्यों रहे हो ?

तभी हमारे शाह लतीफ क्या कहते हैं– हाँ भाई, जो उस प्यारे से मिला हुआ है, उसे रोना नहीं चाहिये बल्कि उसे तो आनन्द में रहना चाहिये। परन्तु एक बात और है– वो कौन सीः–

पहुती आहियाँ पिरन ते - मतां कटर पवे को

कहते हैं– मैं परमात्मा से मिलकर एक हो गया हूँ। मेरा मन परमात्मा से मिल चुका है। परमात्मा भी मेरे साथ ही है और मैं परमात्मा के साथ हूँ। परन्तु एक भय लगा रहता है कि कहीं मेरे से कोई ऐसी गलती न हो जाये जिसके कारण परमात्मा फिर रूठ न जाये इसलिये परमात्मा से रो रोकर प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझसे अंत तक कोई गलती (पाप) न हो जाये।

४. "नाम" जैसा कोई स्नेही नहीं

देखो संसार में पिता भी स्नेही, माता भी स्नेही, भाई–बन्धु भी स्नेही और यार दोस्त भी कहते हैं हम भी स्नेही हैं।

परन्तु हमारे गुरु महाराज जी कहते हैं कि दुनियाँ में "नाम" जैसा कोई भी स्नेही नहीं। और सारे आप को बीच में छोड़ देंगे अथवा तो आप इन्हें छोड़ देंगे। परन्तु परमात्मा का नाम, गुरु का नाम आपका सच्चा स्नेही है, वो आपको कभी नहीं छोड़ेगा। इसलिये यदि आप गुरु व

ईश्वर से कुछ याचना करें तो और कुछ मत करना– यही याचना करना कि– हे गुरु महाराज ! मैं सोते–जागते, चलते–फिरते, खाते–पीते ऐसे कहता रहूँ। बोलो–सत्नाम साक्षी, जय श्री कृष्ण ! जय श्री कृष्ण ! इसलियें आगे कहते हैं।

तन मन धन अरदास करुं मैं, मांगत नाम स्नेही राम !
आशवंदी गुरु तो दरिआई।

५. प्रार्थना भक्त की स्थिति

प्रभु (प्यारे) के स्मरण की निशानी कौन सी है ! हमारे महात्मा गाँधी इसी विषय पर अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं कि जिस समय आप परमात्मा के आगे प्रार्थना करने के लिये बैठें, प्रभु परमात्मा के समक्ष जब अपना पूरा हाल पेश करें तो उस समय हृदय बिल्कुल पिघल जाना चाहिये। आँखों में आँसुओं के अलावा और कुछ न हो। इसे कहते हैं प्रार्थना।

हंसते–हंसते या इधर–उधर देखना, यह कोई प्रार्थना नहीं और न ही यह यादगिरी कही जायेगी। यदि उस प्यारे की याद में आंसू नहीं आये तो फिर वो यादगिरी किस काम की ?

६. विषय विकार रूपी कुत्ते जीव के पीछे पड़े हैं

एक कुत्ता कहीं से मांस का लोथड़ा लेकर आ रहा था, रास्ते में उसे दूसरे कुत्तों ने देखा, तो वे उस कुत्ते के पीछे पड़ गये और आगे चलकर फिर उसे घेर लिया। घेर उसे काटने लगे वो कुत्ता भी बड़ी देर तक उनसे झूझता रहा, जब वे कुत्ते उस कुत्ते पर भारी पड़ गये, तभी वो कुत्ता उस मांस के लोथड़े को छोड़कर भाग खड़ा हुआ। उसके बाद फिर वे कुत्ते उस मांस के लोथड़े को काफी देर तक चबाते रहे, लेकिन वो कुत्ता उनसे आजाद होकर चला गया।

इस प्रकार यह जीव भी जब तक माया की आसक्ति को रखे रहेगा और संसार को पकड़े रखेगा तब तक विषय विकार रूपी कुत्ते इस जीव को छोड़ने वाले नहीं। फिर वो सारा जीवन इनसे झूझता ही रहेगा। जब छोड़ेगा, तभी आजाद होगा।

७. सन्त सेवा से लाभ

महापुरुषों की सेवा से उनके संग से अनेक आध्यात्मिक लाभ होते हैं। सेवा से साधक के अंतर्मन की शुद्धि होती है।

जीव का लोक परलोक सुधर जाता है। हमें भी जितना हो सके अपने जीवन में कैसे भी करके साधु संगत व संत सेवा करनी चाहिये।

८. अनुभवी सन्त के पास जाओ

देखो भाई – मटका भरने के लिये वहाँ जाना चाहिये जहाँ पानी की पर्याप्त व्यवस्था हो और पानी भी शुद्ध हो; वृक्ष भी वो ही अच्छा जिसमें फल–फूल व छाया हो। ऐसे ही हमें भी ऐसे सन्त के पास जाना चाहिये। जिसके पास स्वयं का अनुभव हो। जिसकी कथनी व करनी में कोई अन्तर न हो।

९. परमात्मा के लिये भूख पैदा करो

सिन्ध की एक पुरानी कहावत है कि आदमी को "भूख में बसर (प्याज) भी मीठे लगते हैं।"

इस प्रकार यदि आप अपने अंदर परमात्मा के लिये भूख (अनुराग) पैदा करेंगे, तो आपको भी परमात्मा का नाम मीठा लगेगा। अतः आप पहले अपने अन्दर भूख तो पैदा करो।

१०. संसार मन का गुलाम, मन फिर सन्त का गुलाम

यह सारा संसार है मन का गुलाम और मन के कहने पर ही चल रहा है, परन्तु सन्त (साधक) कहते ही उसी को है जिसका मन आज्ञा में चले। इतना संसारी और सन्त में अन्तर है। हमारे गुरु महाराज जी कहते हैं कि संसार में लोग कैसे–कैसे गुलामी से ग्रस्त हैं–

तन दे गुलाम कोई, मन दे गुलाम कोई।
धन दे गुलाम कोई, गुलाम मकान दे।।
नारि दे गुलाम कोई, बार दे गुलाम कोई।
कार दे गुलाम कोई, गुलाम दीवान दे।।
राज दे गुलाम कोई, साज दे गुलाम कोई।
काज दे गुलाम कोई, गुलाम जहान दे।।
और दे गुलाम टेऊँ, जग में बहुत देखे।
विरले ही गुलाम हैं, प्यारे भगवान दे।।

संकलन : प्रेम प्रकाशी दिलीप

बोधकथा

मातृदेवो भवः

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज'' के पावन श्रीमुख से निःसृत

प्रस्तुत प्रसंग पूज्य महाराज श्री के प्रवचनो का एक अंश है इस प्रसंग के माध्यम से पूज्य महाराज श्री ने ''मातृ भक्ति'' पर मार्मिक व सरल विचार प्रकट किया है। आइये हम इस प्रसंग को अपने जीवन में आत्मसात कर माता–पिता के आशीर्वाद के पात्र बनें। **–सम्पादक**

मातृभक्त दीवान द्रोद्रमल

सम्राट अकबर के दरबार में नौ वजीर होते थे। उसमें चार हिन्दू थे और बाकी मुस्लिम थे। इन चार हिन्दुओं में से एक बीरबल, दूसरा था दीवान दोदर मल, तीसरा था कवि गंग एवं चौथा आचार्य जी, ये चारों वजीर अकबर के दरबार में थे।

अब, ये दीवान द्रोद्रमल जो बहुत ही काबिल एवं विद्वान था। उस समय जो वसूली का काम था वह दीवान के हाथ में ही था। इसके अतिरिक्त राज्य की अनेक शिकायतों व समस्याओं का निपटारा भी बड़ी कुशलता से किया करता था। अतः दीवान साहेब का बड़ा सम्मान था, वस्तुतः ये सन्त तुलसीदास जी के शिष्य थे। अब कौन सी बात वो ध्यान से सुनो–

एक समय की बात है कि दीवान द्रोद्रमल ने सन्तों के मुख से सुना था कि औलाद को माँ–बाप की सेवा अवश्य ही करनी चाहिये और भी बहुत कुछ सुना था। जब ये बात सुनी तो उस जमाने में एक लाख रुपये लेकर आया अपनी माँ के पास और माँ से कहता है– माँ, ये जो एक लाख रुपयें मैं आप के पास ले आया हूँ, आप इसका अपने हाथों से दान पुण्य करो। बेटे के कहें अनुसार माँ ने उन पैसों को गरीबों में दान कर दिया।

दान करने के बाद अभिमान करने से बचें

तभी दीवान के मन में अहंता हुई कि आज मैंने भी बहुत बडा काम किया है। इस अहंकार में आकर उसने अपनी माँ से कहा– माँ बेटे तो ऐसे। देखो मैने आज एक लाख रुपये आप से दान करवाया है। बताओ ऐसे पुत्र कहाँ मिलेंगे ? यह आपका पुत्र दोदर ही एक ऐसा है जिसने..........!

जब माँ ने ये सब सुना तो वह माथे पर हाथ रख कर कहने लगी–ओहो ! अरे मेरी इसने सेवा तो की, दान तो करवाया, परन्तु अब अभिमान कितना कर रहा है। अब वो अपने बेटे से क्या कहती है वो सुनो–

''बेटे तुम्हारे जन्म के समय मैंने जो चार पल उस भयंकर पीड़ा को सहन किया था, उसकी तुलना तुम्हारे इस एक लाख से नहीं की जा सकती।''

दीवान का अभिमान से निवृत होना

दीवान ने जब अपनी माँ से ऐसा सुना तो एकदम अवाक् सा रह गया। और माँ से कहने लगा– माँ वो कैसे ? तभी माता कहने लगी– बेटे जब तू मेरे गर्भ में था तो मैंने एक ज्योतिषी से पूछा कि मेरे गर्भ में जो सन्तान है वो बालक है कि लड़की ?

जब ज्योतिषी ने कहा कि लड़का है। फिर मैंने पूछा कि ये अमीर बनेगा या गरीब ? तब उस ज्योतिषी ने कहा– यदि पहिली घड़ी में बच्चे ने जन्म लिया तो यह मजदूर बनेगा और दूसरी में आयेगा तो सरकार का साधारण कर्मचारी बनेगा। तीसरे पहर में आयेगा तो बड़ा आफीसर बनेगा और यदि चौथे पहर में जन्म लेगा तो वजीर बनेगा यदि पांचवी घड़ी में जन्मा तो यह बच्चा राजा बनेगा।

अतः मैंने गर्भ के समय अपने आप को उलटा कर दिया यानी टांगे ऊपर और सिर को नीचे रखा। क्योंकि मेरी इच्छा थी कि मेरा बेटा राजा बने, इस लिये मैंने ऐसा किया। उस समय बेटे मेरे को जो पीड़ा हुई– मैं जोर–जोर से चिल्ला रही थी। आँखें तो एक दम अश्रु से भर चुकी थीं। अतः मुझे तो समय कुछ दिख भी नहीं रहा था। उस

वक्त ऐसी तो मेरी दयनीय दशा हो गई। लेकिन, फिर भी मैंने ये निश्चय किया कि मैं मरूँ कोई बात नहीं परन्तु मेरा बेटा कहीं मजदूर न बने। इस लिये जब पहली घड़ी निकल गई तो मुझे प्रसन्नता हुई। दूसरी निकली तो भी खुशी हुई। तीसरी घड़ी को भी मैं सहन कर गई, परन्तु बेटे चौथी घड़ी में मूर्छित हो गई, अतः उस मूर्छित अवस्था में मेरे को ऊपर से नीचे किया, उस घडी को मैं सहन नहीं कर पाई तब उस मूर्छित अवस्था में तुझे जन्म दिया। यदि उसे भी सहन कर जाती तो आज तुम किसी रियासत के राजा होते। परन्तु उस विवशता के आगे मेरा जोर नहीं चल पाया।

बेटे ! उन चार घड़ियों–जिसमें मैं उलटी लटकी हुई थी के बराबर तुम्हारे ये एक लाख तो एक क्षण के समान हैं। परन्तु वाह बेटे आज तुम एक लाख दान करने का इतना अभिमान कर रहे हो ?

अपनी माता द्वारा इतना सुनकर दोदूरमल की आँखें नम हो गई। और वह माँ के चरणों में नतमस्तक होकर कहने लगा– "हे माता ! मेरे लिये आपने इतना कष्ट व परिश्रम किया है, इतनी पीड़ा को सहन किया है, इसलिये ये एक लाख तो क्या यदि आपके चरणों में सारी दुनियाँ को रख दूं न तो भी मैं इसी महान ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। हे माँ तुम सचमुच कोई शक्ति हो।

इसलिये भाई, माता–पिता का हमारे ऊपर बड़ा उपकार है। इसका बदला हम किसी से भी नहीं चुका सकते हैं। अतः मैं तो सभी से कहता हूँ कि जितना हो सके माता–पिता की खूब सेवा करो। स्वयं को पीछे रखो, माता–पिता को पहले स्थान दो। अरे खुद को कपड़े पहनने के लिये न मिले तो कोई बात नहीं परन्तु अपने माता–पिता को वस्त्रों से अलंकृत करो।

स्वयं पैदल चलो कोई बात नहीं है लेकिन माता-पिता को सवारी पर बैठाकर चलो। माता-पिता का स्थान तो झूले में झुलाने जैसा है। जब ऐसा करोगे तो तुम्हारा यहाँ कल्याण होगा ही परन्तु परलोक भी सुधर जायेगा।

अरे जिसने माता–पिता का सम्मान नहीं किया वो फिर भगवान व गुरु, सन्तों का क्या सम्मान करेगा। तभी यहाँ महाराज जी लिखते हैं–

जगत हरीअ जो मन्दिरु जाणिजि, ठाकुर पाण हरी थी।
सेवा करि तूं सभ देहिनि जी,
जाणी ठाकुर द्वारा, सेवा करियो सेवा वारा।।

इस जगत को जगत मत समझो, यह जगत है भगवान का मन्दिर ! इसे भगवान का मन्दिर समझकर सेवा करो। यह जो देह है, देह नहीं है अपितु भगवान का मन्दिर ही है। मन्दिर किसे कहते हैं ? जिसमें परमात्मा विराजमान हो, तो हम सब के अन्दर परमात्मा है या नहीं है ? है ! तो फिर यह उसका मन्दिर है। अरे भाई बाहर के मन्दिर तो आदमियों द्वारा निर्मित किये गये हैं। परन्तु यह (अन्दर) मन्दिर तो स्वयं भगवान ने निर्मित किया है। जो मन्दिर स्वयं परमात्मा ने निर्मित किया हो, फिर उसमें विराजमान भी हो पहले उसकी पूजा अर्चना करें। सेवा आदि करें। यह बाहर के मन्दिर भी अच्छे हैं। वस्तुतः यह मन्दिर हमें स्मृति करवाते हैं, परन्तु वास्तविक मन्दिर हैं– गरीबों, अपाहिजों एवं माता–पिता की खूब सेवा करना। इस लिये कहा गया है–

गुरुदेव माता, गुरुदेव पिता, गुरुदेव स्वामी परमेश्वरा।

प्रथम गुरु माता है, फिर दूसरा क्रम पिता का है। इसके बाद तीसरा वो है जो हमें विद्या दान देकर सुशिक्षित करता है। उसके बाद जो चौथा क्रम आता है वो सद्‌गुरु का है। "माँ" की महिमा अनन्त है।

मातृ देवो भवः ! पितृ देवो भवः !! आचार्य देवो भवः !!!

अतः मेरा तो युवाओं से भी यह आह्वान है कि यदि तुम भगवान के मन्दिर में सम्मान चाहते हो तो पहले अपने पिता-माता की सेवा करो। यदि आप अपने माता-पिता की सेवा नहीं करोगे तो आपकी होने वाली सन्तान भी ऐसा ही करेगी। इसलिये महरबानी करके आप..............।

अरे कृतघ्न नहीं होना चाहिये। **मैं तो समाज से यही अपील करता हूँ कि भगवान की सेवा बाद में करो, गुरु की सेवा बाद में करो परन्तु पहले माता-पिता की सेवा करो। जिन्होंने हमें इस जहान में लाया है** बालपन से पाल–पोस कर इतना बड़ा किया और वृद्ध माता–पिता का तो खासकर हमें निश्चित ध्यान रखना चाहिये। उनकी कद्र किया करें। कई लोग घर में अपने वृद्धों का अपमान करते हैं, उन्हें शायद मालूम नहीं ये उनका अपमान नहीं है ये सीधा परमात्मा का अपमान है। अतः हमें उनसे प्रेम से बर्ताव करना चाहिये। जब ऐसा आप करेंगे, ऐसी सेवा भावना रखेंगे तो स्वयं सन्त भी तुम्हें नमस्कार करेंगे।

संकलन : प्रेम प्रकाशी दिलीप

प्रेरक प्रसंग

पूज्य महाराज श्री सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के सत्संग प्रवचन से

परमात्मा की तड़प पैदा करो

एक माता थी, उसे अपने मकान के टेरिस पर कुछ काम पड़ गया। अतः अपने छोटे बच्चे को नीचे छोड़कर स्वयं अपने काम से ऊपर चली गई। उसने सोचा यदि बच्चे को ऊपर ले जाऊँगी तो काम नहीं करने देगा। अब जिस रास्ते से ये माता ऊपर गयी, वो रास्ता उस बच्चे ने देख लिया। अब बच्चा जोर–जोर से मम्मी–मम्मी करने लगा। बच्चे की आवाज सुनकर माता ने क्या किया कि दो–चार खिलौने जो वहाँ पड़े हुये थे, वो बच्चे की तरफ फेंक दिये, बच्चा भी खिलौने देखकर खुश हो गया। पुनः दो–चार मिनट खेलकर वो फिर से रोने लगा। माता ने फिर खिलौने भेजे, फिर लड्डू, तो कभी मिठाई, ऐसे कुछ न कुछ वो उस बच्चे को देती गयी जैसे बच्चा चुप हो जाये और मैं अपना काम निबटा लूँ। माता ने सभी तरीके अपनाये, परन्तु बच्चे ने रोना छोड़ा ही नही। अब मजबूरन माता ने कहा बेटा आ रही हूँ। लेकिन बच्चा सुन नहीं पाया और रोते रोते उस ऊपर जाने वाले रास्ते के पास आकर खड़ा हो गया। अब सोचने लगा कि मम्मी यहीं से ऊपर गई हुई हैं, मैं बार–बार बुलाकर थक गया हूँ सुनती भी नहीं, मुझे अब पक्का भरोसा है कि वो अब नहीं आयेगी, अच्छा तो मैं खुद वहाँ जाता हूँ। अब वो बच्चा सीढ़ी चढ़ने की हिम्मत थी भी नहीं, फिर भी उसे अपनी माँ के प्रति प्रेम था सो वो प्रेम में आकर सीढ़ी चढ़ने लगा, जैसे सीढ़ी चढ़ने लगा, उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ा जैसे वो बच्चा गिरा तो माता ऊपर से दौड़ती हुई आई अपने बच्चे को उठाया। अपनी गोद में रखकर उसे चुंबन देने लगी फिर और खिलौने मंगवाकर उसे दिये, जेब में कुछ पैसे रखने को दिये। तरह–तरह की मिठाई देने लगी। कभी उसे अपने से जोर से आलिंगन करती बच्चा भी बहुत खुश हुआ। विचार करने लगा कि अच्छा हुआ जो गिर पड़ा कि मम्मी इतना प्रेम दे रही है। मिठाईयाँ दे रही है वैसे तो एक कौड़ी भी नहीं देती, आज तो..... । बच्चा बहुत प्रसन्न हुआ।

कुछ दिन के बाद वो बच्चा माँ के पास आकर कहता है, मम्मी मुझे लड्डू दो। मम्मी कहती है बेटे लड्डू कहाँ से लाऊँ ? मम्मी पहले कैसे दिया ? बेटे पहले तुम गिर गये थे न तभी। अच्छा मम्मी अब नहीं दोगी तो मैं फिर से गिरने जाऊँगा। माता ने कहा अच्छा गिरो तो गिरो।

अच्छा मम्मी मुझे थोड़े से पैसे दो। बेटे अब पैसे कहाँ से लाऊँ मम्मी ने कहा। मम्मी पहले जो दिये थे, बेटे तू गिर गया था न, इसलिये दिये। बेटे ने गुस्से में आकर मम्मी मैं अभी भी गिरने जा रहा हूँ। जा गिर तो गिर मम्मी ने कहा।

अच्छा मैया, आखिर वह भी गया और पूर्व की भाँति सीढ़ी से गिरने का नाटक करने लगा। सीढ़ी पर पैर रखा और गिर पड़ा, उसने सोचा कि मम्मी आयेगी मगर मम्मी नहीं आई। अब कहने लगा अरे दिया तो कुछ नहीं मगर यहाँ आई भी नहीं। तभी चुपचाप गिर करके आया अपनी माँ के पास– मम्मी पहले जब मैं गिर गया था, तो तुम ऊपर से दौड़ती हुई चली आई, सारे काम छोड़कर मुझे प्रसन्न करने लगी। मुझे खूब प्यार दिया। खूब पदार्थ दिये। आज जो मैं गिर गया तो तुमने देखा तक नहीं ? माँ– बेटे आज तूने गिरने का नाटक किया ! वो सब पैसे के लिये, लड्डू के लिये अथवा अन्य पदार्थों के लिये किया और जो तू पहले गिरा वो वास्तव में था और मेरे मिलने के लिये था, इसलिये मैं दौड़ती चली आई और तुझे उठाकर खूब प्यार दिया। आज तू गिरा है, लड्डू के लिये, पैसे के लिये, अतः तेरी रक्षा भी आज वो ही करेंगे।

अरे भाई यह भी ऐसे ही हैं। हम जो शिकायत करते हैं भगवान से कि भगवान हमारी सुनता नहीं है, सुनता नहीं है, भगवान हमारी मदद के लिये आता भी नहीं है। तो हमारी पुकार है मात्र पुत्र व पदार्थ वास्ते, धन्धे को बढ़ाने के लिये, शरीर से रोग हटाने के लिये, बाकी भगवान से मिलने के लिये भगवान को नहीं पुकारते अगर परमात्मा से मिलने की तरफ ध्यान रखकर परमात्मा को बुलायेगें तो परमात्मा क्षणांश में ही हमसे आकर मिलेगें। अब ऐसे बोलो–

मोहन मनठार आ-गोविन्द गमटार आ
साँवरो सरदार आ-हिरदे जो हारुआ।
कृष्ण करतारआ-प्राणन अधारआ।
तहिंजी अभिलाष गुरु तहिंजी अभिलाष।
राम सा मिलाइ तूं-मूंखे श्याम सां मिलाइ तूं।
इहा अरदास गुरु-इहा अरदास.........

संकलन : प्रेम प्रकाशी दिली

पावन प्रसंग

सत्गुरु शांतिप्रकाश अमृतवाणी

पूज्य गुरुदेव की पावन गिरा से प्रवाहित

कथा सीखने का तरीका

जब शुरूआत में महाराज जी (सत्गुरू टेऊँराम) के पास अमरापुर स्थान टण्डे आदम में आना हुआ तो उस समय हमें कथा करने का तरीका नही आता था तब महाराज जी ने हमें कथा सीखने के ख्याल से एक सरल उपाय बताया। महाराज जी ने हम सन्तों को आज्ञा दी कि आप संत लोग जंगल में अकेले जाकर वहाँ के वृक्षों को आदमी का रूप देकर उन्हे पुस्तक पढ़कर सुनाओ फिर व्याख्या करो। महाराज जी की आज्ञानुसार हम उन वृक्षों के नाम रखकर फिर कथा किया करते थे। ऐसे करते–करते हम कथा प्रवचन सीख गये। महाराज जी तो इतना भी कहते थे भाई आप अकेले जंगल में जाकर वृक्षों से न अपने अंदर का हाल चाल कहोगे तो इससे आपके अंदर का भार भी हलका हो जायेगा।

संत मोटे क्यों होते है ?

जहां मै गुरू ग्रन्थ साहेब का अध्ययन किया करता था वहाँ एक बार किसी आदमी ने हमारे ज्ञानी जी से पूछा–ज्ञानी जी यह साध(संत) मोटे क्यों होते हैं ? उस आदमी की बात सुनकर ज्ञानी जी मुस्कराके चुप हो गये। तब मैंने ज्ञानी जी से पूछा यदि आज्ञा हो तो मैं इन्हें जवाब दूं ? ज्ञानी जी ने कहा हां। तब मैंने उसे कहा कि भाई यह संत लोग इसलिये मोटे होते हैं चूकि इन्हें कोई चिंता या गम नहीं रहता इसलिये वे तंदुरुस्त रहते हैं।

यदि आप भी चिंता करना छोड दो तो आप भी इसी तरह तन्दुरूस्त रह सकते हैं। देखो संत लोग खाते भी दाल और सादा रोटी हैं तो भी आनंद में रहते हैं भाई लाखों रूपये भी तुम्हारे पास करोड़ तुम्हारे पास, पत्नि, पुत्र, पदार्थ भी तुम लोगों के पास, लेकिन इतने होते हुये भी रोते भी आप ही हैं। इसलिये मैं तो आपको एक सच्ची सलाह दूँगा कौन सी ?

मुंहिजो जे चवणु मञो-बारें बुचें संत बणों।
गाईन्दा खाइन्दा वतो-आनन्दु ही आनन्दु आ।
संतनि जे संग में-आनन्दु ही आनन्दु आ।

रोने का तरीका

यहाँ उल्हासनगर–४ में ईसरसिंह करके एक कथाकार थे। उसके कथा करने का एवं अरदास करने का ढंग ऐसा था कि कई लोग उसकी कथा सुनकर रो पड़ते थे।

फिर मैंने एक दिन जाकर उससे पूछा आप कथा करके दूसरों को तो रुला देते हैं भला यह तो बताओ कि क्या तुम भी ऐसे रोते हो? कहने लगा हां मैं भी रोता हू परन्तु मेरे रोने में और इन लोगों के रोने में अंतर है। मैंने पूछा भाई फिर भला आप कैसे रोते हो ? कहने लगा जब न मुझे अरदास (भेंट) में पैसे कम मिलते हैं तब मैं भी रोता हू भाई ऐसा जो रोना है वो बेकार है। यह एक विकार है। और जो प्रेम वाला रोना है वो हृदय को नरम कर देता है फिर इससे हमारा मन स्वच्छ बन जाता है।

सांई शांति रखो

जब गुरू महाराज जी (सत्गुरू टेऊँराम)ने मेरा नाम ''शांति प्रकाश'' रखा तब थोड़े समय के बाद मै रतेदेरे गांव में सत्संग करने के लिये गया। वहाँ एक आदमी मेरे पास आकर कहता है 'सांई नालो त शांतिप्रकाश अथव पर कथाऊं त वदॖ आवाज सां थो करीं। कथा में त तुंहिंजो वदो आवाज आहे। यानी सांई नाम तो आपका शांतिप्रकाश है परन्तु कथा तो बड़े जोर की आवाज में करते हो। मैंने कहा–भाई फिर आपकी क्या मर्जी है ?

मेरे से कहता है– सांई शांति रखो।

फिर मैंने भी शांति से चुपी रख ली, अब लोगों को मालूम हुआ तो वे मेरे पास आये कहने लगे स्वामी जी आप कृपा करके कथा करो कल से सारे प्रेमी परेशान हो गये हैं कृपा करके आप कथा करो। मैने उन प्रेमियों से कहा भाई पहले आप उस आदमी से पूछ कर आओ जिसने हमें शांति से बैठने के लिये कहा है।

अब सारे गांव वाले उसके पास गये फिर वोही प्रेमी भागता हुआ आया सांई महरबानी करे हली ग़ाल्हायो।

मैने कहा क्यों भाई? पहले तो कहते थे चुप हो जाओ अब? कहता है सांई मैं संतो से नहीं पहुँच पाऊँगा।

जब भी कही बाहिर जाना होता है तो लोग ऐसे–ऐसे प्रश्न ले आते हैं परन्तु वहां भी गुरू महाराज की कृपा से सरलता से उत्तर दे देता हूं। फिर अगले आदमी की भी दिल खुश हो जाती है और मेरी भी।

संकलन : प्रेम प्रकाशी दिलीप

९८ वाँ जन्मोत्सव पर भावांजली

भारत का सौभाग्य

लोक लाड़ले सन्त पूज्यपाद युग ऋषि सत्‌गुरु शांतिप्रकाश जी महाराज

मन अशांत को शान्त कर, तम का करने नाश।
जन्म धार संसार में, आए शान्तिप्रकाश।।

विश्व में कुछ ही संत हुये हैं जो वास्तव में सबके प्रिय बन पाये हैं। जिसके लिये मानव का मस्तिष्क स्वयं झुक जाये ऐसे कुछ ही कोहिनूर हीरे हुए हैं। पूज्यपाद युगविभूति संत शिरोमणि सत्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज उन विरले महापुरुषों में से एक ध्रुव तारे के समान हैं जिनका व्यक्तित्व अत्यंत स्मरणीय है।

पूज्य महाराज श्री का जीवन सबके लिये प्रिय वंदनीय है। चूंकि यह जीवन प्रेम रस से परिपूर्ण था आप विशाल हिरदे के धनी थे, जहाँ समस्त समुदाय को एक साथ स्थान मिलता था। किसी भी जाति सम्प्रदाय का व्यक्ति क्यूं न हो परन्तु महाराज श्री के यहाँ बिना भेद–भाव के सबको एक समान प्यार मिलता था। संत–साधू व फकीरों से तो आपका लगाव था ही परन्तु हरिजनों से भी उतना ही प्रेम करते थे जितना अन्य से किया करते थे। आपकी दृष्टि विशाल थी। आपका हृदय प्रभु–प्रेम से व कृष्ण रस से युक्त था। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के वैश्विक विचार आपके रोम–रोम में सन्निहित थे। एक संत की विशालता कैसी रहनी चाहिये यह आपके पवित्र जीवन में दृष्टिगोचर होता था।

आप सनातन संस्कृति के उद्‌घोषक कृष्ण प्रेम के प्रेरक व प्रचारक एवं वेदान्त विचार के प्रदाता थे। आप समस्त मानव समाज के उत्थान के लिये निरन्तर चिन्तन करते रहते थे।

आपका भारत माता के प्रति पूर्ण प्रेम था। इस लिये आपने विदेशों में जाकर भारतीय संस्कृति की महिमा व गरिमा को खूब प्रसारित किया। आप भारत को विश्व गुरु के रूप में प्रचारित करते थे। विदेशों में आपने कई बार प्रवचनों में यह आह्वान किया था कि–आप लोग भले ही यहाँ विदेशों में रहो खूब विकास करो, परन्तु अपनी भारतीयता को मत छोड़ना। इस विषय को आप अनेक प्रसंगों के द्वारा समझाया करते थे।

इसके साथ भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व समुदाय के विकासके लिये प्रभु परमात्मा से प्रार्थना (पल्लव) किया करते थे।

आपने भजनों की रचना के माध्यम से गुरु महाराज व भगवान से प्रार्थना कर सारे ब्रह्माण्ड के लिये **''सर्वे भवन्तु सुखिनः''** की भावना प्रतिपादित की।

आपको यदि कहीं से भी दुख की आवाज आती थी तो आप गम्भीर हो जाते थे। एवं तुरन्त सेवा संस्थाओं के माध्यम से उसका निराकरण करने का भरसक प्रयास करते थे।

आप कहा करते थे कि– जितना भी इस दास के शरीर को मानव समाज की सेवा का सुअवसर दिया जाता है यह दास उतना ही प्रसन्न होता है।

आपका जीवन स्वयं एक संस्था था जहाँ से सदैव लोक कल्याणकारी सेवा कार्य सुचारुरूप से चलते रहते थे। सदैव पैरों में गति व मुख मण्डल पर मस्ती (आनन्द) आपका व्रत था। जीवन पर्यन्त समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए अपने सर्वस्व सौंप दिया। भारत की पावन भूमि को ऐसे पावन विरक्त संत पर गौरव होता है।

सत्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की महान धरोहर है।

भारत भूमि का यह परम सौभाग्य है जो ऐसे विरक्त महात्मा का इस धरती पर प्राकट्‌य हुआ। आज सारा विश्व आपकी वन्दना करते हुये आपके कोमल व पावन चरणों मे कोटि–कोटि प्रणाम करता है।

सविनय : प्रेम प्रकाशी दिलीप

सद्गुरू शांतिप्रकाश – अमृतमय स्मृति

६७वें जन्मोत्सव पर विशेष

विश्व वंदनीय पूज्य गुरुदेव

तुझे कैसे भूल जाऊँ -तू तो मेरी ज़िंदगी है

स्तुतिः- जगहितकारी जगत में–देखा संत विशाल।
सत्गुरू शांति प्रकाश जी–दाता दीन दयाल।।
धर्मरूप बन धरनी पै–करने धर्मप्रचार।
सत्गुरू शान्तिप्रकाश को–वन्दन बारम्बार।।
सत्गुरू शांति प्रकाश की–बड़ी अनोखी बात।
सरल सरस सुखरूप है–मधुर-मधुर मुस्कान।।

भजन

तर्जः- ईचक दाना मीचक दाना..........

थलुः- सत्गुरु मुंहिंजो दीन दयालू–अंर्तयामी आहे महिर वसायें।
स्वामी शांतिप्रकाश प्यारो–हरहंधि हाज़िर आहे–महिर वसाये।।

१. सचो सुख धाम आ–दीन्दो विश्राम आ
लाहे दुख दोखियुनि जा–पूरण कंदो काम आ
जेको पुकारे श्रद्धाधारे–तंहिजो वारो वसाये, महिर वसाये

२. हीणनि हमराह आ, बेवाहन जी वाह आ
दीननि जो दाता सांई, दया जो दरियाह आ
जन्म जन्म जा दुखड़ा मेटे–सुखड़ा दे थो ठाहे–महिर वसाये

३. जे को जिते याद करे–सांई तहिंखां कीन परे
पूरो विश्वास धरे–तंहिंजो कम रास करे
शरणागत जी सत्गुरू सांई–हरदम लाज बचाए-महिर वसाये

महापुरूषों का जीवन प्रेरणा का पुंज होता है, जहाँ से सतत प्रेरणादायी शिक्षाओं की धारा प्रवाहित होती रहती है। ऐसे महापुरूषों का जीवन एक ऐसी दिव्य ज्योति के समान है जो अज्ञान के अंधेरे में भटक रहे हम सभी जीवो को मार्गदर्शन देने में सक्षम है। इसलिये हमारे धर्म ग्रन्थों ने सन्तों के सत्संग की बड़ी महिमा बताई है। जिन्हें भाग्य से ऐसे, सन्तो का सत्संग मिल जाता है, शास्त्र की दृष्टि से, वो संसार में बड़ा भाग्यशाली व कृतार्थ व्यक्ति है। शास्त्र के इसी न्याय से यह दास भी बड़ा भाग्यशाली है, जो मुझे भी पूर्वजन्म के पुण्य के प्रताप से पूज्य मामाजी के पावन सानिध्य से इस युग की महान विभूति युगान्तकारी सन्त शिरोमणी पूज्यपाद सदगुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के पावन दर्शन व सत्संग का लाभ मिला। वो दिन आज भी मेरे लिये सर्वोत्तम दिन है जिस दिन ऐसी विलक्षण शक्ति के पावन दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आहा! परम तेजस्वी मुखमण्डल पर मंद–मंद मुस्कराहट सिर पर शिखरवत पगड़ी शरीर पर भगवा स्वेटर कन्धे पर भगवा रंग की साफी साधारण वेशभूषा, अगल बगल में असंख्य प्रेमियों के झुंड, फिर धीरे–धीरे से चलते हुये, राधा कृष्ण, गोपाल कृष्ण की पावन धुनी, मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हम इस मृत्युलोक में है ही नही अपितु कोई दूसरे विशेष लोक में है।

जी हां! यह वो ही दृश्य है जब, मुझे प्रथम बार, पूज्य महाराज श्री सदगुरू शान्तिप्रकाश जी के पावन श्री चरणों में बैठने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। वो दृश्य आज भी मेरे लिए ज्यों का त्यों ताजा बना हुआ है।

असंख्य आबाल–वृद्ध अलौकिक मस्ती विचरण कर रहे थे जैसे भंवरा गुलाब के फूल पर विचरण करता है। चारो ओर दिव्य वायु मण्डल, हरि कीर्तन व भजन आदि की ध्वानियाँ मन को झकझोर कर रही थी।

असंख्य लोग पूज्य गुरूदेव के दर्शनार्थ काफी समय से एकटक समग्रता से निहार रहे थे। मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे आज कई दिनों के भूखे व्यक्ति को अनेक प्रकार के व्यंजनो के साथ भोजन मिलने वाला हो।

सबकी आँखे उस प्यारे को देखने के लिये लालायित थीं, बड़ी उत्कंठा लिये हृदय में, एक ही बात गूंज रही थी कि कैसे भी उस परम पुनीत शिखर को हमारा स्पर्श हो जाये और हमारा यह जीवन कृतार्थ हो जाए मन में एक ही बात थी बस आज उस परम चेतना को आलिंगन कर, हरदम के लिये उसी के बन जायें।

जैसे–जैसे समीप होता गया वैसे– वैसे एक चुंबकीय शक्ति मुझे उस परम चेतना की ओर खीचंती चली गई।

बस अब क्या था, मन में भावुकता पूर्ण प्रार्थना की कि हे प्रभू ! आज नहीं तो फिर कभी नहीं। मुझे आज ही अपना लो। यदि आज आपने अपना लिया, फिर संसार में मुझे कोई भी ठोकर नही मार सकता।

गुरूवर तेरे चरणों की, गर धूलजो मिल जाये,
सच कहता हूँ भगवन, तक़दीर बदल जाये,
सुनते है कृपा तेरी, दिन रात बरसती है,
गर बूंद जो मिल जाये, कली दिल की खिल जाये
गुरूवर तेरे.....................

प्रार्थना में बड़ी ताकत होती है मन में अभी ऐसे भाव उत्पन्न हो ही रहे थे कि अचानक, मामाजी ने पूज्य महाराज श्री से निवेदन किया हे प्रभू यह मेरा भांजा है दिलीप, आपके श्री चरणों में आया है, कृपा करके इसे भी अपने श्री चरणों की सेवा प्रदान करो।

प्रार्थना को सुनकर यकायक पूज्य महाराज श्री ने अपने कोमल कर कमलों से संकेत कर समीप बुलाया, अरे भाई आपका नाम क्या है ? मैने कहा सांई मेरा नाम दिलीप है। फिर कहा अच्छा, अच्छा तुम तो अपने बेटे हो, बस ऐसा कहकर शीतल व पावन सीने से आलिंगन कर अपने पवित्र प्रेम में लपेट लिया।

मैंने सोचा बस अब बात बन गई। बहुत जन्मों की बिगड़ी हुई बात आज सुधर गई। मन में प्रसन्नता व पुलकावली के अतिरिक्त और कुछ था ही नही।

फिर रात्रि के समय महाराज श्री अपने आसन पर विराजमान थे मैं भी श्री चरणों में बैठा था। इतने में मामाजी ने कहा कि मेरा विचार है कि तुम नामदान ले लो, यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं महाराज श्री से आज्ञा लूं मैने विचार पूर्वक दीक्षा के लिये हां कर दी, फिर महाराजजी से आज्ञा भी ले ली, महाराज श्री ने प्रातः चार बजे दीक्षा के लिये बुलाया। मैं प्रातः चार बजे तैयार होकर महाराज श्री के चरणों में पहुँच गया। दीक्षा के उपरांत पूज्य महाराज श्री ने मेरे हाथ को पकड़ खूब शिक्षायें प्रदान की, और कहा तुम आज से हमारे हो।

इसके पश्चात मेरे मन में खूब सात्विक विचार आने लगे कि मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ जो ऐसे कलियुग में भी ऐसे परम पुनीत गुरूदेव को प्राप्त कर लिया। अब श्री गुरूदेव की कृपा नितांत बरसने लगी। साधना में मन लगने लगा। सात्विक प्रवृत्तियों में वृद्धि होने लगी।

यत्र–तत्र आनन्द का स्त्रोत प्रवाहित होने लगा। भौतिक चेष्टाएँ उपरित होने लगीं। यही गुरूदेव की कृपा का फल था। हे गुरूदेव ! आपका परम स्नेह, अहैतुकी कृपा, अकारण करूणा एवं आपके द्वारा बख्शीश किया गया पावन नाम, आज भी पूरी सुरक्षा कर रहा है। आप सदैव हमारे हृदय पटल पर विराजमान हैं। आपका अलौकिक प्रेम हमें आपकी स्मृति देता हैं। आप सदैव हम सब के मन मंदिर में विराजमान हैं। आपने सभी वर्गों के लोगों से प्यार किया, सब में प्यारे श्याम सुंदर को देखा। आज समस्त विश्व समुदाय आपकी अनंत बार वन्दना कर रहा है।

"सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी, आप जैसा कोई विरला महापुरूष ही इस वसुधा को प्रेम से, भक्ति से, ज्ञान से विकसित कर सकता है अन्यथा कोई नहीं।" आप जैसे महात्मा इस धरातल पर दुर्लभ है। आप तो आप ही थे। आप की अहेतुकी कृपा हम सभी जीवों पर बरसती रहे बस ऐसी प्रार्थना है। सदैव आप हमारे अंतःकरण में प्रतिष्ठित रहें। संसार की कोई कामना अब अतिक्रमण न करे इतनी लाज रखना। आपके पावन चरणों में कोटि कोटि वन्दना करता हुआ मन का यह भाव आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।"

भजन

तर्ज :- सत्गुरू खे थी सारियां.......

थलु :- सत्गुरू शांति प्रकाश–सुमति दि्यो सांई सची

१. काम बुली आ दा॒ढो सतायो– हया शर्म ऐं मर्म विञायो
कटियो काम कुवास, सुमति दि्यो.......

२. क्रोध आ दा॒ढो शोर मचायो– जीअ मुहिंजे खे जहिं त जलायो
कर्यो क्रोध खे नास– सुमति दि्यो.........

३. लोभ करे केई पाप कमायमि– पाप करे पहिंजो पाण विञायम
पटियो पाप जी पाश, सुमति दि्यो......

४. मोह मुंझायो मन मुहिंजे खे – दुखी कयो आ तन मुहिंजे खे,
मेटे मोह जी फास – सुमति दि्यो........

५. अंहता वारी अकड़ ओरांगे– धर्म कर्म सभ वयो वरांगे,
हटायो होद् ऐं हास– सुमति दि्यो.........

निवेदक : प्रेम प्रकाशी दिलीप

युग पुरूष सद्‌गुरू स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के दिव्य जीवन का परिचय

गीता के चौथे अध्याय में भगवान दिव्य जीवन की चर्चा करते हुये कहते है:-

जन्म कर्म च मे दिव्य मेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। व्यक्त्वा देहं पुर्नजन्म नैति मामोति सोऽर्जुन ।।

ऐसे दिव्य व अलौकिक जन्म कर्म से सुशोभित पूज्य गुरूदेव सत्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज भी इस युग की एक महान विभूति थे। आइये उनके दिव्य व निर्मल जीवन का अवलोकन करें।

१. राम जैसा – **स्वभाव**
२. कृष्ण जैसा – **प्रभाव**
३. शंकर जैसा – **सद्‌भाव**
४. संतो से – **लगाव**
५. हरिनाम का – **लुभाव**
६. कामनाओं का – **अभाव**
७. सद्‌मार्ग के – **शिक्षक**
८. शरणागत के – **रक्षक**
६. दीनों के – **संरक्षक**
१०. भजनों के – **लेखक**
११. सत्गुरू टेऊँराम के – **सेवक**
१२. कृष्ण प्रेम के – **प्रेरक**
१३. भजन में – **मग्न**
१४. लोक सेवा में – **लग्न**
१५. प्रचार प्रसार में – **सघन**
१६. शुद्ध – **आहार**
१७. मधुर – **व्यवहार**
१८. विशुद्ध – **विहार**
१६. अधम – **अघहारी**
२०. चिंता – **प्रहारी**
२१. अमंगल – **संहारी**
२२. लोककल्याण – **कारी**
२३. जीव दया के – **पुजारी**
२४. मूरत मंगल – **कारी**
२५. परिव्राजक
२६. परिपालक
२७. शुद्ध संचालक
२८. वाणी में – **सरलता**
२६. जीवन में – **समता**
३०. सबसे – **समरसता**
३१. जीवन – **सुखकारी**
३२. विश्व – **हितकारी**
३३. दर्शन – **मंगलकारी**
३४. सत्संग के – **सरदार**
३५. दानियों में – **दिलदार**
३६. सुंदर व – **समझदार**
३७. सनातन संस्कृति के – **प्रचारक**
३८. वेदांत चिंतन के – **विचारक**
३६. प्रेम प्रकाश मंडल के – **संचालक**
४०. अधमों के – **उद्धारक**
४१. समाज के – **सुधारक**
४२. दासों के – **आधारक**
४३. मस्तिष्क में – **मति**
४४. पैरों में – **गति**
४५. इंद्रिय – **जती**

प्रस्तुति : प्रेम प्रकाशी दिलीप

सूचना

प्रस्तुत अंक अगस्त + सितम्बर का संयुक्तांक है आगामी अंक १५ अक्टूबर को प्रकाशित होगा। सभी पाठक प्रेमी नोट कर लेवें।

व्यवस्थापक–***प्रेम प्रकाश सन्देश***, ग्वालियर

प्रश्नोत्तर माला

क्या आप जानते हैं ?

सही उत्तर ढूंढे

अनंत श्री विभूषित सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के जीवन चरित्र से संबंधित प्रश्न

१. सत्गुरू शांतिप्रकाश जी महाराज का प्राकट्य कब हुआ ?
(अ) १८०७ (ब) १९०७
(स) १९११ (द) १९०८

२. महाराज श्री का जन्म किस नगर में हुआ ?
(अ) सक्खर (ब) लाड़काणा
(स) चक (द) खाही

३. पूज्य महाराज श्री के पिता का नाम क्या था ?
(अ) चेलाराम जी (ब) सेवकराम जी
(स) आसूराम जी (द) आसूदोराम जी

४. पूज्य महाराज श्री की माता का नाम क्या था ?
(अ) ज्ञानी बाई (ब) सीता देवी
(स) जुगलदेवी (द) ईश्वरी बाई

५. पूज्य महाराज श्री की अमर कृति कौन सी थी ?
(अ) अमरापुर वाणी (ब) अमरापुर दर्शन
(स) भजन बहार (द) ब्रह्मदर्शनी

६. पूज्य महाराज श्री ने आश्रम कहाँ स्थापित किया ?
(अ) अजमेर (ब) मुम्बई
(स) उल्हास नगर (द) कल्याण

७. आश्रम का उद्घाटन किस महापुरूष ने किया था ?
(अ) स्वामी गुरूमुखदास जी ने
(ब) स्वामी चंदनराम जी ने
(स) सत्गुरू शांतिप्रकाश जी ने
(द) सत्गुरू सर्वानन्द जी ने

८. पूज्य महाराज श्री विद्या अध्ययन के लिये कहां गये थे ?
(अ) काशी (ब) मथुरा–वृन्दावन
(स) हरिद्वार–अमृतसर (द) हैदराबाद–सिन्ध

९. पूज्य महाराज श्री प्रेमप्रकाश मंडल के मंडलाध्यक्ष कब बनें ?
(अ) १९८२ (ब) १९७७
(स) १९७१ (द) १९६६

१०. पूज्य महाराज श्री प्रेमप्रकाश मंडल के कौन से मंडलाध्यक्ष थे ?
(अ) द्वितीय (ब) चतुर्थ
(स) तृतीय (द) प्रथम

११. पूज्य महाराज श्री किस (हरि) नाम का सत्संग में उद्घोष करते थे ?
(अ) जय श्री राम (ब) जय श्री कृष्ण
(स) जय भोलेशंकर (द) जय गंगे

१२. महाराज श्री का जीवन-चरित्र किस लेखक ने लिखा है?
(अ) डॉ. दयाराम (ब) डॉ. शिवकुमार
(स) डॉ. दयाल आशा (द) डॉ. दीनदयाल

१३. पूज्य महाराज श्री का निर्वाण कब हुआ ?
(अ) १९९१ (ब) १९९२
(स) १९९० (द) १९९३

१४. पूज्य महाराज श्री का पवित्र समाधि स्थल कहां पर स्थित है ?
(अ) जयपुर (ब) मुम्बई
(स) उल्हास नगर (द) हरिद्वार

१५. पूज्य महाराज श्री का निर्वाण कहाँ हुआ था ?
(अ) हांगकांग (विमान में) (ब) जर्काता (विमान में)
(स) बैकांक (विमान में) (द) सिंगापुर (विमान में)

१६. पूज्य महाराज श्री ने संन्यास दीक्षा किससे ली ?
(अ) स्वामी आसूराम (ब) स्वामी टेऊँराम
(स) स्वामी ग्वालानंद (द) स्वामी सर्वानन्द

१७. पूज्य महाराज श्री को सर्वप्रथम किस महापुरूष का संग मिला ?
(अ) सांई आसूराम (ब) सांई टेऊँराम
(स) सांई हरचूराम (द) सांई सेऊराम

१८. पूज्य महाराज श्री द्वारा रचित भजन इनमें से कौन-सा है?
(अ) आए थे स्वामी टेऊँराम
(ब) घर–घर में तस्वीर दिसां थो
(स) मुंहिजो सत्गुरू टेऊँराम आ
(द) सत्गुरू टेऊँराम के बिन

१९. पूज्य महाराज श्री सत्संग के पूर्व कौन-सी प्रिय धुनी लगाते थे ?
(अ) सत्गुरू सर्वानन्द हमें अभय दान दीजिये
(ब) श्रीमन्नारायण नारायण नारायण
(स) गोविंद जय जय गोपाल जय जय
(द) श्री राम जय राम जय जय राम

२०. पूज्य महाराज श्री की अध्यक्षता में कौन-सा शानदार उत्सव मनाया गया ?
(अ) सत्गुरू सर्वानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव
(ब) सत्गुरू टेऊँराम जन्म शताब्दी महोत्सव
(स) चैत्र मेला शताब्दी महोत्सव

-प्रस्तुति प्रेमप्रकाशी दिलीप

स्वामी हरिदासराम महाराज जी की पावन स्मृति में

सांईं हरिदास राम जी की पुण्यतिथि के उपलक्ष में कुछ यादें कहने को तो बहुत कुछ है परन्तु जब लिखने बैठो तो समझ नहीं आ रहा कि किस प्रकार सांई की महिमा का बखान करूं। इतनी शक्ति तो मुझ में है ही नहीं। फिर सांई से प्रार्थना करती हूँ कि मुझे इतनी शक्ति देना कि मैं अपनी इस तुच्छ बुद्धि से कुछ लिखने की कोशिश कर सकूँ और आप मुझ नन्हीं गुड़िया पर अपनी कृपा की छांव सदैव बनाये रखना।

एक बार की बात है कि सांई सभी सन्तों के साथ हथीन आए थे जैसे कि हर साल आते थे तो एक दिन के लिए हथीन भी रहा करते थे। सुबह दरबार में हवन–झंडे का प्रोग्राम तथा कुछ बच्चे अपना प्रोग्राम सांई के समक्ष पेश करते थे और सांई वहाँ के स्कूल के बच्चों को मिठाइयाँ तथा टॉफियाँ तथा खर्ची बटवाते थे। इसके साथ ही सांई को गाँव का जीवन बहुत पसन्द था। मैं सांई के रूम में गई तो सांई से पूछा। सांई शाम को हमारे घर चल रहे हो न। सांई पहले तो बहुत उलझा देते थे बाद में हाँ करते थे। तो सांई ने हाँ कर दी तो मैंने ३ बजे तक कोई तैयारी नहीं की थी। सांई ने ४ बजे घर पर आना था। मैं सांई के रूम में शाम को दोबारा गई। मन ही मन यह सोचती हुई कि सांई हमारे घर आ रहे हैं घर पर तैयारी भी नहीं है और मैं सांई को खिलाऊंगी क्या ? सांई मीठा तो खाते नहीं हैं। तो मैं इसी सोच में थी और सांई को कहा कि सांई मैं घर जा रही हूँ तैयारी करने, आप पापा जी के साथ आ जाना। सांई ने बोला हाँ–हाँ और एक थैली पकड़ा दी कि ये घर ले जा। मैं उसमें देखने की कोशिश करने लगी तो सांई ने बोला यहाँ नहीं खोल, घर पर जाकर खोलियो, सांई ने बोला Secret है तो मैं घर आई ओर मैंने सबसे पहले उस थैली को खाला तो उसमें क्या देखती हूँ कि काजू किशमिश बदाम तथा १ पैकेट चिवड़ा नमकीन जो सांई को बहुत पसन्द थी। और इंग्लिश मेरी के बिस्किट जो सांई खाते थे। उस थैली में थे। मैं तो देखते ही दंग रह गई। सांई की इतनी कृपा को देखकर भावनाओं को इतनी अच्छी तरह से समझ सकना। मेरे तो आंसू ही बहने लगे और सांई भी मेरे पीछे थोड़ी देर बाद हमारे घर आ गये। मैंने सांई और सन्तों के आगे वो सब कुछ ही रखा जो उन्होंने मुझे दिया तो सांई ने सभी संतों को कहा–अरे भई नमकीन खाओ कुछ तो खाओ। हम गरीबों के साथ सांई का इतना स्नेह देखकर तो ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात कृष्ण भगवान हमारे घर पर आये हैं। वो कुछ ऐसे ही पल थे जो मैंने सांई के साथ बिताये और जो हृदय पर गहरी छाप छोड़ गये इतना प्यार देखकर तो सांई के प्यार में डूब जाने का मन करता है। उन यादों को याद करके ऐसा लगता है कि सांई अभी हमारे साथ हैं। मन की बात इतने ध्यान से सुनते थे और पूरी भी करते थे। गरीबनिवाज बहुत ही दयावान थे। गरीबों पर उनकी विशेष कृपा व स्नेह था। मैं तो बस सांई से अब भी यही प्रार्थना करूँगी कि सांई अब भी मुझे आप अपने चरणों में लगाये रखना तथा मुझ अज्ञानी बालक को अपना प्यार देते रहना।

तेरे मन में मैं रंग जावां, तेरे नाम ये दिल कर जावां,
हमें न भुलाना सांई हमें न भुलाना
हरिदास राम सांई हमें न भुलाना
भूल नहीं जाना हमको भूल नहीं जाना
दिया जो वचन तो सांई उसको निभाना।

तर्ज : (चला भी आ–आजा रसिया......)
दरस दिखा ऽऽऽ ओ ऽऽऽ सांई मेरे
सतगुरु मेरे नैनां तेरी राह निहारे
तेरा दरशन पाने को ये तरसे निगाहें।

१. तेरे दरस को तरसे, ये अंखियाँ
चैन न आये मोहे, जांगू सारी रतिया
याद हैं आये मोहे, तेरी ही बतियां
मेरे मन बस गया, तू हैं साँवरिया
ओ मेरे कन्हैया, ध्यान लगाऊँ मैं तेरा
मन में तू बस जाये कोई दूजा न आये।
तेरे दरसन पाने...................

२. मेरी जिन्दगी का तू आसरा है
सहारा कोई न मेरा तेरे सिवा है।
भवसागर में डूब रहा हूँ
किनारा कोई न मुझे अब मिल रहा है
बता तू कहाँ है, जाऊँ कहाँ तू ही बता ऽऽऽ
तेरे बिना कौन नैया पार लगाये।
तेरा दरसन पाने को ये तरसे निगाहें।
सत्गुरु मेरे नैना...............

मीनू प्रेम प्रकाशी, हथीन

कुम्भ मेला समाचार

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र छावनी का शुभारम्भ

प्रतीक्षा की घड़ियाँ अनन्तः पूरी हुईं। सेवाधारों की सेवायें, व्यवस्थापकों की व्यवस्थाओं को पूर्णता मिली। ५ अगस्त की प्रातःकालीन मधुर वेला में जब इस सदी के पहि न सिंहस्थ कुम्भ महापर्व में स्वामी टेंऊराम, प्रेमप्र ाश अन्न क्षेत्र छावनी का शुभारम्भ प्रेम प्रकाश मण्डल के पंचम पीठाधीश्वर परम पूजनीय सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन कर कमलों से आप ही की पावन अध्यक्षता में हुआ। सद्‌गुरु भगवान के गगन भेदी जयघोष के साथ लगभग एक हजार से भी अधिक प्रेमियों व सन्त मण्डल की उपस्थिति में प्रातःकाल की मधुर बेला में सूर्योदय के साथ–साथ आज अमरापुर धाम (नासिक) में प्रभात फेरी की शुरुआत सत्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की आज्ञानुसार प्रातः साढ़े ५ बजे से प्रारम्भ की गई। तत्पश्चात् प्रातः ७ बजे से नित्य प्रार्थना के साथ–साथ संत श्रीमुक्त, संत शंकरलाल, संत हरीओम जी द्वारा सत्संग का मधुर आनन्द प्रेमियों को मिला। तत्पश्चात् सत्‌गुरु महाराज जी ने अपनी मधुर आवाज में मंगलाचरण करते हुये सत्संगामृत का अमृतपान कराते हुए कहाः–

सत्गुरु की कृपा बिना सरे न कोई काज।
तॉते गुरु की शरण ले कहे टेऊँ तज लाज।।

हर एक कार्य में गुरु कृपा का होना अति आवश्यक है और कृपा आशीर्वाद के लिये प्रार्थना आज से कुम्भ मेला नासिक में प्रेम प्रकाश छावनी मेला प्रारम्भ हो रहा है। पुरुषार्थ ही मानव लक्ष्य की प्राप्ती का साधन है। इसी प्रसंग पर सत्संग पश्चात् आरतियाँ एवं पाठ रखे गये। प्रेम प्रकाशी ध्वजा फहराने के बाद प्रेमियों सहित त्र्यम्बकेशवर तीर्थ दर्शन हेतु गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज पधारे। प्रातःकाल संतों को भोजन प्रसादी का कार्यक्रम भी शुरु हुआ। इस सेवा कार्य को सन्त मुरलीधर जी महाराज व प्रेमियों की सहायता से सुचारू रूप से चलाया जा रहा है। कुम्भ मेले में देश विदेश के कई शहरों के प्रेमी भाग ले रहे हैं।

सायंकाल के सत्संग में सन्त नरेशलाल जी ने प्रभु भरोसा और हरिशरणं के प्रसंग पर सत्संग किया, सन्त हरीश कुमार जी ने संकीर्तन की धूम मचाई। परम पूजनीय सद्‌गुरु स्वामी श्री भगतप्रकाश जी महाराज ने अमृत वचनों में मनुष्य चोला जो दुर्लभ है देवताओं के लिये भी, इसी प्रसंग पर सत्संग किया। इन्हीं सभी कार्यक्रमों में हमारे कई प्रेम प्रकाशी सन्तों ने भी भाग लिया। सन्त जयदेव जी, सन्त अनन्त प्रकाश जी, सन्त जीवन मुक्त, सन्त मुरलीधर, सन्त हरीओम, सन्त शकरलाल, सन्त राजूराम, सन्त हरीश कुमार भी सम्मिलित थे।

दिनांक ७ अगस्त २००३ को पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज के साथ सन्त स्वामी वेदप्रकाश जी व सन्त रमेश प्रकाश जी का आगमन भी हुआ।

एकादशी के महापर्व पर मां गंगा गोदावरी के तट पर स्नान हेतु सत्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डल को साथ लेकर साक्षी शिवोऽम की धुनी संकीर्तन करते हुये रामकुण्ड में स्नान किया। उसी समय इन्द्र भगवान भी अपनी बरखा पुष्प लेकर बरस गये। उनकी इस बरखा पुष्प से सभी प्रेमी आनन्द विभोर हो गये। यह अद्‌भुत नजारा देखने योग्य था। कुम्भ मेला छावनी की व्यवस्थाओं

में सन्त मोनूराम जी की देखरेख में १५ जुलाई से ही जयपुर, अजमेर, मुम्बई, मुरैना, नासिक इत्यादि के प्रेमियों के साथ विदेशों से आये प्रेमी भी निष्काम भाव से अन्न क्षेत्र छावनी में सेवा कार्य कर रहे हैं। २२ से २६ अगस्त तक छावनी में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव (हरिद्वार के स्थान पर) नासिक में ही सम्पन्न होगा। इस अवसर पर देश–विदेश के विविध क्षेत्रों से भारी संख्या में प्रेमीयों ने सम्मिलित होने के लिये रेल, बसों से अपने आरक्षण करवा लिये हैं।

''आलस्य और अज्ञान दो महान शत्रु''

कुम्भ मेले के अन्तर्गत श्री प्रेम प्रकाश छावनी में महामण्डलेश्वर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जन समूह को सम्बोधित कर अपने गहन विचारों का अमृत उड़ेलते हुये समझा रहे हैं।

गफ्लत में न गवाँइये, मानुष देह महान।
कहे टेऊँ तुम जागके, भज लो श्री भगवान।।

एक अनजान व्यक्ति को ज्ञान का कुछ पता नहीं, धर्म का कुछ पता नहीं, दूसरा गाफिल (आलसी) व्यर्थ की बकवास में समय व्यतीत करने वाला। गाफिल जानेगा सब परमात्मा की कृपा से सूझ भी पड़ेगी पर उस सूझ को नकारेगा। समय पर कार्य नहीं करेगा। नाम जप नहीं करेगा। विषय सुख में लम्पट रह कर शुभ कर्मों को कल पर टालेगा। ***आज कहे मैं काल करूँगा, काल कहे फिर काल। आजकाल के करत ही, अवसर जाँसी चाल।।***

और इस प्रवृत्ति से समय निकल जायेगा। शरीर क्षीण हो जाता है। फिर आलस्य और बहाने शुरु हो जाते हैं।

अंग गलितं पलितं मुंड दशन विहीनं जातुम् तुंडम्

जिन पाँवों से धरती नापी जाती आज वो कदम शिथिल हो गये। शक्तिहीन हो गये। नेत्रों की दृष्टि कमजोर, हाथ भी साथ नही देते, फिर पछतावा होता है और कुछ हाथ लगता नहीं।

हमें यह मानव जीवन का अनमोल उपहार मिला है, सद्व्यवहार करते हुये परमार्थ नहीं बनाया प्रपंच्र में फँसे रहे जो कार्य सबसे जरुरी था वही भूल गये।

तोसां सत्गुरु थीदों साणीं
पढु प्रेम सां तहिजीं ब्राणी

१. ***गफ्लित जी छदि निंड हटाए***
मन पहिजें जो मान मिटाए
रखु निवड़त थीउ निमाणी

२. ***नाम गुरनि जो यादि करे तूं***
अङणु पहिजों आबाद करे तूं
वठु जाण अलख जी जाणी

३. ***कहे टेऊँ गुण गोविंद गाए***
राम पंहिजें खे वठु रीझाए
पीउ प्रेम सच्चे जो पाणी

अन्तःकरण की वृत्ति पवित्र होगी। नाम जप से ध्यान चिन्तन से मन की आदतें, चाहतें, बदल जायेंगी फिर विचार बदलेंगे। फिर आचरण बदलेंगे। सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महराज ने नाम जप करके ही उस परम पदवी को पाया।

ईश्वर प्राप्ति का मात्र एक साधन है नाम । बाकी सब व्यर्थ है। उस अविनाशी को जानने के लिये। उस परम तत्व को पाने के लिये है। एक ही आधार नाम स्मरण अगर हमें समझ में आ जाये तो आलस गफ्लत छोड़कर नाम स्मरण करें तो जीवन अवश्य सफल हो जायेगा। इसके पूर्व सन्त जयदेव जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा :–

गुरु ज्ञान दे हरि ध्यान दे।
जहिंसा सफलो जनम करियां।।

कुम्भ मेला यानि अपने आपसे मिलने का अवसर गोदावरी का स्नान सन्तों का सानिध्य इस अवसर का कदर करें। कुछ पाकर ही जायें। मनुष्य

जीवन की इसी में सफलता है।

प्रभुजी मेलहु संत सच्चारे।
जांकी संगति भव सागर से पल में पार उतारे।।

उन सच्चे सन्तों से हे प्रभु मिलन करा दे जिनके संग से मेरा कल्याण हो। जीवन में सिर्फ खाना, पीना, सोना नहीं है।

कुछ खावणा कुछ सोवणा और न राख्यो चीत।
सत्गुरु शब्द विसारिया जो आदि अंत का मीत।।
अनमोल तेरा जीवन यूँ ही बिता रहा है।
किस ओर तेरी मंजिल, किस ओर जा रहा है।।

ये समझ उसको आवेगी। जिस पर गुरु कृपा होगी, सुख शान्ति का आभास ज्ञान ध्यान सब गुरु माध्यम से ही सम्भव है।

हरि मेली है संत जन हरि से देत मिलाय।
कहे टेऊँ छोड़त नहीं जो जन शरणी आय।।

कबीरदास जी ने भगवान से क्या माँगा।

रिद्धि न मंगू सिद्धि न मंगू, मंगू निशदिन ऐह।
निशिदिन दर्शन संत का, कह कबीर मोहि देह।।

उन का बाल भी बाँका नहीं होता जो सद्गुरु के उपदेशों का आधार लेते हैं। एक–एक विषय में आसक्त होने से इन पाँचों का नाश हुआ।

अलि, पतंग, गज, मीन, इक इक रस की आँच।
तुलसी तांकी कौन गति, जिनमें व्यापे पाँच।।

अलि कहते हैं कि भंवरे को सुगंधी में जिसकी आसक्ति होती है एक भंवरा कमल के फूल का रस लेने में मस्त सांझ हो गई। कमल का फूल अपनी पखुंड़ियाँ बन्द करने लगा। भंवरा फूल के अन्दर बंद हो गया। रात भर रस मिला। सुबह सूर्योदय की किरणें जब इसे प्रफुल्लित करेंगी यह पुनः खुल जायेगा। तब मैं उड़ जाऊँगा। पर रात में एक हाथी उस सरोवर में पानी पीने आया और उस कमल को सूँड़ में उठा कुचल दिया। और भवरां मारा गया। पतंगा कहते हैं परवाने को जो शमा के रूप पर आसक्त है बार–बार जलती शमा के रूप पर मोहित उसे छूना चाहता है। और उस आसक्ति में जलकर मर जाता है।

गज स्पर्श सुख की आसक्ति में फँसा हुआ है। शिकारी एक कागज की हथिनी बनाकर एक बड़े गड्ढे के ऊपर रख देते हैं हाथी उसका स्पर्श सुख लेने जैसे ही उसके पास जाता है उस गड्ढे में गिर जाता है। और शिकारी उसे पकड़कर ले जाते हैं।

मीन कहते हैं कि मछली वह जिव्हा के स्वाद के कारण मौत का वरण करती है। काँटे में लगे आटे के स्वाद को छोड़ना नहीं चाहती और फंस जाती है।

इसी तरह इन सबकी मौत होती है। एक–एक विषय की आसक्ति इनके मौत का कारण बनती है। पर हे मनुष्य तेरे बारे में क्या है तुझमें इन पाँचों विकारों का भरपूर जोर है, आसक्ति है, रूप, रस, स्पर्श स्वाद आदि सभी व्याप्त है। तुलसीदास जी कहते हैं। फिर हे मनुष्य तेरी क्या गति होगी पर कहते हैं– हे साधक घबरा नहीं।

पाँच हुआ तो क्या हुआ जो होवन पच्चीस।
तुलसी तांके कुछ ना बिगड़े जिन गुरु चरणां रख्या सीस।।

जो गुरु का आधार लेते हैं। उन्हें गुरु कृपा से ये विकार व्याप्ते ही नहीं। इन विषयों पर अधिकार हो जाता है। आधीनता खत्म हो जाती है।

बाल न बांका कर सके जो जग बैरी हाये। बस यही करते हैं।

आज्ञा तुहिंजी रोज मञां
भेरो तो दर नां भञां
भोग विषय दे कीन वञां
चित हरि चरननि में त धरियां

बस यही कुन्जी है सच्चा जीवन जीने की।

–कुम्भ मेला छावनी से प्राप्त

मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जन्मोत्सव की धूम

गत् जुलाई २००३ के अंक में मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जन्मोत्सव के समाचार प्रकाशित किये गये थे, उसके उपरान्त भी जन्मोत्सव की मौज के समाचार अनेक आश्रमों, मण्डलियों की ओर से अभी तक निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं। वाह-वाह मेरे सद्‌गुरु टेऊँराम, देखी तेरी महान शक्ति।

दिल्ली, नेहरू नगर स्थित प्रेम प्रकाश मन्दिर में दादी रुकमणी देवी बताती है कि ५ जुलाई को आचार्य श्री के पावन अवतरण दिवस पर पाकिस्तान में रहड़की साहब के सुविख्यात सन्त सांई साधराम साहब भी जन्मोत्सव में सम्मिलित हुए। **भाटापारा** से श्री आत्माराम गोइन्दानी जी **भाटापारा** में मनाये गये जन्मोत्सव की विशिष्ट विशेषता बताते हुए कह रहे हैं कि ११७ आरतियों की थालियाँ और हर थाली के नीचे नम्बर अंकित, ड्रा में जिसका पहिला नम्बर निकला वह सौभाग्यशाली प्रेमी गुरु महाराज़ को पखर, दूसरे नम्बर वाला प्रेमी गुरु महाराज को माला, और तृतीय नम्बर वाले प्रेमी को गुरुदेव भगवान के स्वरूप को तिलक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वाह रे प्रेमियों का जोश उत्साह-- लेखनी के बस की बात नहीं हैं। **टौंक** राजस्थान से डॉ. हरीश व डॉ. कैलाश बदलानी के भेजे समाचारों के अनुसार जन्मोत्सव के दिनों में टौंक शहर की फिजां ही निराली हो गयी थी। जिसे देखो आचार्य श्री की धुनि में मस्त हुआ जा रहा है। ५ जुलाई को प्रभात फेरी का भव्य आयोजन, ध्वजा वन्दन व भक्त वीरभानदास द्वारा भक्ति संगीत के द्वारा सद्‌गुरु महाराज की महिमा बखान। टौंक सहित देश के हर उस भाग में मनाये गये सद्‌गुरु महाराज के जन्मोत्सव के समाचार पत्रों व दृश्य मीडिया द्वारा कवरेज किये गये, जिनकी कतरनें भी कार्यालय को प्राप्त हुई है। **सूरत** आश्रम में पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में १६ से २० जुलाई तक जन्मोत्सव की मौज मची। **वाराणसी** से निशा प्रेम प्रकाशी व संध्या धनानी (लता) लिखती हैं जन्मोत्सव के पश्चात् छठी उत्सव में उमंग धनानी बने बाल रूप में सांई टेऊँराम तो माता कृष्णा बनने का सौभाग्य मिला- भावना धनानी को पूज्य पिता श्री चेलाराम जी का स्वांग रचने का सौभाग्य था- रश्मि लालवानी का, छठी में नामकरण करने के लिये पण्डित बनी थी (पूजा), इस अवसर पर बाल कलाकारों ने नृत्य करके सबका मन मोह लिया। **सिवनी** से विमला गुरनानी के अनुसार बाबा झामनदास जी के सानिध्य में जन्मोत्सव की शोभा बड़ाई सिवनी वासियों ने बढ़-चढ़ कर पंचदिवसीय कार्यक्रमों में भाग लेकर। **अहमदाबाद** में प्रेम प्रकाश आश्रम के अतिरिक्त जय भारत सिन्धी समाज सेवा मण्डल, सरदार नगर द्वारा भी आचार्य श्री के जन्मोत्सव को बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया। **हांगकांग** में सन्त नामदेव जी महाराज के सानिध्य में प्रेम प्रकाश मन्दिर में जन्मोत्सव का आनन्द प्रेमियों ने लिया। स्पेन के प्रेम प्रकाश मन्दिरों सहित विश्व के अनेक भागों में रह रहे प्रेम प्रकाशियों ने बड़े ही श्रद्धायुक्त वातावरण में उत्साह भक्ति के साथ जन्मोत्सव का आनन्द लिया।

कार्यालय डेस्क

समीक्षा नयी केसेट्स
(ऑडियो/सीडीस)



अहिन तुंन्जि आसरे

आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज रचित पावन श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ से कुछ चुने हुए भजनों को मुम्बई के विंग्स स्टूडियो में स्वरबद्ध किया है हमारे वन्दनीय प्रेम स्वरूप सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने।

साईड ए (१) आहिनि तुंहिजे आसरे जे (२) सन्त सच्चा सामीअड़ा (३) औखी सोखी है प्रीतम प्यारा।

साईड बी (४) सत्‌नाम साक्षी निर्धारु (५) प्रभु दीन दयाल, सुमति दे मूंखे (६) तुहिंजे दर ते आयुसि भगिवान (७) अजु मुहिजा थ्या थमि भागु भला।

सिन्धी बोली में पूज्य स्वामी जी के मुखारविन्द से निःसृत मधुरातिमधुर आवाज में आचार्य श्री के रचित भजनों की केसिट्स प्रभु परमात्मा व सद्‌गुरु महाराज के प्रति भक्ति भाव को प्रगाढ़ करती हुई हमे सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने में सहायक होगी। इसका (वीडियो/सीडीज्) का लोकार्पण कुम्भ मेला छावनी में किया गया है। रूपये २५ में ऑडियो व रुपये ५० में सीडीज् को प्राप्त किया जा सकता है, कुम्भ मेला छावनी व श्री अमरापुर स्थान के अतिरिक्त सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों से।

शोक समाचार

प्रो. एस.एन. मनवाणी

जीवनभर सतनाम साक्षी के उच्चारण करने वाले सागर के समाजसेवी, इतिहास विभाग, सागर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और प्रेम प्रकाश आश्रम कोरबा की दादी पम्मीबाई के भाई प्रो. एस.एन. मनवाणी का १६ जून को स्वर्गवास हो गया। प्रो. साहब ने सागर में अनेक समारोह सम्पन्न कराए। इनमें सिन्धी भगत, सिन्धी नाटक, कवि सम्मेलन प्रमुख हैं। उन्होंने सैकड़ों लोगों को सिन्धी भाषा सिखाई। वे हमेशा समाजहित में सक्रिय रहे। एन.सी.सी. अधिकारी होकर उन्होंने कैप्टन की पदवी भी प्राप्त की। मोरवी (गुजरात) की १६७६ की बाँध दुर्घटना के बाद राहत कार्यों का नेतृत्व किया।

माता मीरादेवी तलरेजा

२ अगस्त २००३ को रात्रि ६.४५ बजे श्रीमती मीरा देवी पत्नी स्वर्गीय श्री वसणाराम तलरेजा ६६ वर्ष की आयु में सत्नाम साक्षी का उच्चारण करते हुए अमरापुर धाम सिधारीं। सद्गुरु देव के प्रति अनन्य श्रद्धा प्रेम रखने वाली माता मीरादेवी जी ने सद्गुरु महाराज की महिमा के अनेक भजनों की रचना भी की थी। मुरैना में प्रेम प्रकाश आश्रम की स्थापना के पूर्व श्री वसणाराम जी के घर पर ही प्रेम प्रकाश मन्दिर संचालित था, जिसकी सेवा माता मीरादेवी जीवन भर करती रहीं। स्वर्गीय मीरादेवी तलरेजा के पति अमरापुरवासी श्री वसणाराम जी टंडेआदम से चैत्र मेले में कोठार की सेवा का कार्य सुचारु रूप से जयपुर, हरिद्वार व कुम्भ मेलों में जीवन पर्यन्त करते रहे। आज उनकी सन्तान चन्द्रलाल, वाशू, सांवल, मोहन भी मेलों में कोठार के सेवा कार्यों को व्यवस्थित रूप देते आ रहे हैं। माता श्री की अन्तिम यात्रा में पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज, सन्त जयदेव जी, सन्त हरीओम प्रकाश जी, भक्त मूलचन्द जी, माता रूकीबाई, माता लाजवन्ती भी ३ अगस्त को सायं ५ बजे मुरैना आकर सम्मिलित हुए। ८ अगस्त को सन्त राजूराम जी व सन्त किशोर प्रकाश जी ने भी मुरैना आकर माता जी को पुष्पांजली अर्पित की।

माता नानकीदेवी माधवानी

२ अगस्त को अर्धरात्रि के पश्चात् प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर में ही सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के वर्सी उत्सव की तैयारी के लिये सेवा कार्य में जुटी माता नानकीदेवी पत्नी स्वर्गीय श्री काशामल जी लगभग ६५ वर्ष की अवस्था में सत्नाम साक्षी मन्त्र का ध्यान करते हुए समाधिस्थ अवस्था में अमरापुर धाम सिधारीं। माता नानकी देवी स्वर्गीय श्री काशामल जी का पूरा परिवार आश्रम के सेवा कार्यों में सदैव तत्पर रहता है।

भोपाल बैरागढ़ में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम सेवा समिति द्वारा प्रतिदिन सत्संग प्रारम्भ

भोपाल :- बी.11/119, डॉ. हैडगेवार हौम्योपेथी हॉस्पिटल के सामने, सन्त हिरदाराम नगर, बैरागढ़, भोपाल में आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सेवा समिति द्वारा पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की आज्ञा से प्रतिदिन सायं ६:३० से ७:३० बजे तक सत्संग का कार्यक्रम गत १० मार्च से निरन्तर किया जा रहा है। बैरागढ़ के प्रेमी सत्संग कार्यक्रम में सम्मिलित होकर लाभ उठावें।

महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का

१०७वां जन्म महोत्सव

शनिवार ५ अक्टूबर से
गुरुवार ९ अक्टूबर तक

श्री अमरापुर स्थान सहित सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर मनाया जावेगा।

समीक्षा

प्रेम प्रकाश मण्डल की 5 नई ऑडियो केसेट्स व सीडी

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातित गायकों के स्वर में



प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित ८२ वें चैत्र मेले के पावन पर्व पर पाँच नई केसेट्स का विमोचन श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

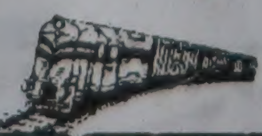
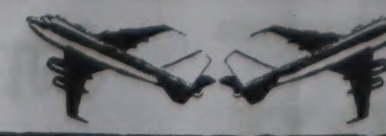
स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी, स्वामी टेऊँराम चालीसा, गुरु प्रार्थना, सत्नाम साक्षी धुनी व स्वामी सर्वानन्द चालीसा के शीर्षक की इन केसेट्स के भजनों को संगीत से संवारा है जानेमाने संगीतकार मिलिंद मोहिने ने। **स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी** शीर्षक केसेट्स में १० भजनों का संग्रह है जिसे स्वर से संजोया है **अनुराधा पौड़वाल, विपिन सचदेवा, साधना सरगम व बाबुल सुप्रिया** ने, **स्वामी टेऊँराम चालीसा** शीर्षक केसेट् में ४ संग्रह हैं। जिसे स्वर दिया है– **सुरेश वाडकर, विपिन सचदेवा, साधना सरगम व अनूप जलोटा** ने।

''गुरु-प्रार्थना'' शीर्षक केसेट में गुरु प्रार्थना, प्रार्थना अष्टक, सोलह शिक्षायें, स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व स्वामी हरिदासराम जी महाराज की आरतियों को बेहद सुन्दर रूप में स्वर दिया है– **अनुराधा पोड़वाल** ने तो पल्लव को संवारा है **साधना सरगम** ने। केसेट **सत्नाम साक्षी धुनी** शीर्षक में ''सत्नाम साक्षी सर्व आधार जो सुमरे सो उतरे पार'' को सुन्दर स्वर दिया है **सुदेश वाडकर व साधना सरगम** ने।

स्वामी सर्वानन्द चालीसा में कुल नौ रचनाओं का संकलन है जिन्हें स्वर से संवारा है **अनूप जलोटा, सुरेश वाडकर, अनुराधा पौड़वाल, साधना सरगम, राम शंकर, मुकेश बांगडा व सुचित्रा भगवत** ने।

पाँचों ही केसेट्स में जो विशेष बात है कि इनकी रिकॉर्डिंग मुम्बई के विख्यात स्टूडियो में की गई हैं वहीं इन्हें स्वर देने वाले गायक अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं। पाँचों केसेट्स में संग्रहित भजनों के बोल स्वर व संगीत सुनने वालों को निश्चित रूप से कर्ण प्रिय लगेगें।

आडियो केसेट्स व सी.डी. प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान के अतिरिक्त सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों व कुम्भ मेला छावनी मूल्य ऑडियो कैसिट 25/-रु, पाँच कैसिट का सेट 125/-रु., सीडीस एक कैसेट 50/-रु, पाँच सीडीस का सेट 200/-रु में उपलब्ध है।


श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

3 अगस्त से 31 अगस्त	2003	तक	नासिक	0253–2620804, 098290–14850
1 सितम्बर	2003		मुम्बई	098290–14850
2 सितम्बर	2003		मद्रास	044–26412703, 28554658
3 सितम्बर	2003		यात्रा	098290–14850
4 सितम्बर	2003		रामेश्वरम्	098290–14850
5 सितम्बर	2003		मदुरै	098290–14850
6 सित. से 7 सित.	2003	तक	कन्याकुमारी	098290–14850
8 सितम्बर	2003		यात्रा	098290–14850
9 सित. से 12 सित.	2003	तक	मद्रास	044–26412703, 28554658
13 सित. से 16 सित.	2003	तक	कोलम्बो (श्रीलंका)	00941508187, 098290–14850
17 सित. से 18 सित.	2003	तक	यात्रा	098290–14850
19 सित. से 24 सित.	2003	तक	जयपुर	0141–2372423, 2372424
26 सित. से 29 सित.	2003	तक	ब्यावर	098290–14850
30 सित. से 3 अक्टू.	2003	तक	कोटा	0744–2451476, 2325873
4 अक्टू. से 5 अक्टू.	2003	तक	मुम्बई	044–26412703, 28554658
6 अक्टूबर	2003		यात्रा	098290–14850
7 अक्टू. से 8 अक्टू.	2003	तक	पिनगंवा	098290–14850
9 अक्टू. से 10 अक्टू.	2003	तक	हथीन	098290–14850
11 अक्टू. से 13 अक्टू.	2003	तक	पलवल	098290–14850

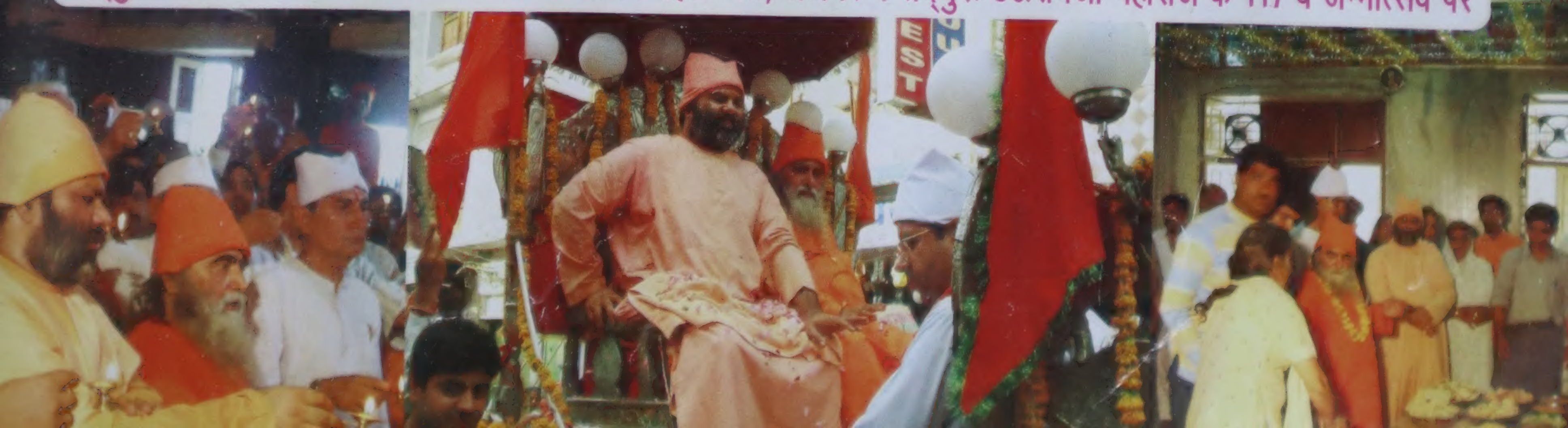
तीज त्यौहार

23	अगस्त	2003	शनिवार	अजा एकादशी व्रत, सद्‌गुरु हरिदासराम पुण्यतिथि उत्सव
24	अगस्त	2003	रविवार	अन्नमटियो
24–25	अगस्त	2003	रवि-सोम	झूलेलाल चालीसा समापन समारोह
27	अगस्त	2003	बुधवार	अमावस्या
29	अगस्त	2003	शुक्रवार	चन्द्र दर्शन
30	अगस्त	2003	शनिवार	हरितालिका तीज व्रत
31	अगस्त	2003	रविवार	गणेश जयन्ती, गणेश चौथ
3	सितम्बर	2003	बुधवार	श्री राधाष्टमी
6	सितम्बर	2003	शनिवार	जल झूलनी पद्मा एकादशी व्रत
9	सितम्बर	2003	मंगलवार	अनन्त चतुर्दशी (अनन्त चौदस)
10	सितम्बर	2003	बुधवार	श्री सत्यनारायण पूर्णिमा व्रत, श्राद्ध पक्ष शुरु
17	सितम्बर	2003	बुधवार	कन्या संक्रान्ति
22	सितम्बर	2003	सोमवार	इन्दिरा एकादशी व्रत
25	सितम्बर	2003	गुरुवार	सर्व पितृ मोक्षवती अमावस्या
27	सितम्बर	2003	शनिवार	शारदीय नवरात्रा शुरु, चन्द्रदर्शन

1	अक्टूबर	2003	बुधवार	चौथ, सद्‌गुरु (टेऊँराम जन्म दिवस मासिक)
2	अक्टूबर	2003	गुरुवार	महात्मा गाँधी जयन्ती
3	अक्टूबर	2003	शुक्रवार	श्री दुर्गाष्टमी
4	अक्टूबर	2003	शनिवार	श्री दुर्गानवमी
5	अक्टूबर	2003	रविवार	दशहरा, विजयादशमी
6	अक्टूबर	2003	सोमवार	पापांक्रशा एकादशी व्रत
9	अक्टूबर	2003	गुरुवार	सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज का अवतरण दिवस, शरद पूर्णिमा
10	अक्टूबर	2003	शुक्रवार	श्री सत्यनारायण, शरद पूर्णिमा व्रत, दान स्नानी
13	अक्टूबर	2003	सोमवार	करवा चौथ व्रत, श्री गणेश चौथ व्रत
18	अक्टूबर	2003	शनिवार	तुला संक्रान्ति
21	अक्टूबर	2003	मंगलवार	रमा एकादशी व्रत
23	अक्टूबर	2003	गुरुवार	धनतेरस
25	अक्टूबर	2003	शनिवार	दीपावली अमावस्या



सद्‌गुरू महाराज व संत मण्डल श्री प्रेमप्रकाश आश्रम देहली गेट, अजमेर में सद्‌गुरू टेऊँरामजी महाराज के 117 वे जन्मोत्सव पर









सद्गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज के 117 वे जन्मोत्सव पर श्री अमरापुर स्थान जयपुर में सद्गुरू महाराज व संत मण्डल (1 से 5 जुलाई, 2003)







सद्गुरु स्वामी हरिदास राम जन्मोत्सव पर सद्गुरु महाराज श्री प्रेमप्रकाश आश्रम कानपुर में






सद्गुरु भगतप्रकाश जी महाराज जयपुर नगर निगम द्वारा निर्मित

सद्गुरु टेऊँराम उद्यान

का उद्घाटन करते हुए साथ में संत मण्डल व शील धाबाई, महापौर जयपुर व प्रेमीगण 12 जुलाई, 2003

सूचना

...सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक, रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही, अपनी सदस्यता का नवीनकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए

व्यवस्थापक

श्रीमान / श्री

RH-4832-15060-7/2004
SHRI KISHANCHAND BOO'IA...
E-19, MADHUVAN COLONY
NAKA MADAR, AJMER (RAJ...

श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के लिए श्रीचन्द पंजवानी द्वारा ओमनी व प्रिन्ट लेजर काम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज से मुदित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वा से प्रकाशित किया गया आवरण साज सजा व मुद्रण गणपति, जयपुर 0141-2207614 सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 2327427, श्रीचन्द पंजवानी, फोन : 2454183